Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 33

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

9 मुहर्रम 1442 हिज्री कमरी 19 जहूर 1400 हिज्री शम्सी 19 अगस्त 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

सद्के का प्रोत्साहन और उसकी उत्कृष्टता

(1416) हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हमें सद्के का हुक्म देते तो हम में से कोई बाज़ार जाता और (वहां मज़दूरी पर) बोझ उठाता और एक मुद् (गल्ला) प्राप्त करता और आज यह हालत है कि उनमें से कुछ के पास तो एक एक लाख (दीनार) हैं।

(1417) हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है उन्होंने कहा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि आग से बचोग चाहे एक टुकड़ा खजूर का देकर।

(1418) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है , वह कहती थीं : एक औरत आई उस के साथ उस की दो लड़कियां थीं। वह मांग रही थी। मेरे पास से उसने अतिरिक्त एक खजूर के और कुछ नहीं पाया। मैं ने उसे वह खजूर दे दी और उसने अपनी दो लड़कीयों के मध्य उसे बांट दिया और ख़ुद उसने नहीं खाया। फिर उठी और बाहर चली गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे पास आए और मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह वाक़िया बताया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जो इन बेटीयों की वजह से किसी तकलीफ़ में मुबतला हो तो वह उस के लिए आग से बचाव का कारण होंगी।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अलज़का, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

إِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا

रब्बानी आलिम से अभिप्राय वह व्यक्ति होता है जो सदैव अल्लाह तआला से डरता है और उस की भाषा असभ्य न हो

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दूसरी कारण ईमान के छीने जाने का यह होता है कि वली अल्लाह ख़ुदा के मुक़र्रब होते हैं,क्योंकि वली के अर्थ निकट के हैं। ये लोग मानो अल्लाह तआला को सामने देखते हैं और दूसरे लोग एक पर्दे में छुपे हुए की तरह होते हैं,जिनके सामने एक दीवार रोक हो। अब ये दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं क्योंकि एक तो उनमें से ऐसा है कि जिसके सामने कोई पर्दा ही नहीं है। ख़ुदा तआला ने उस को आँखें दे दी हैं और एक विवेक प्रदान किया गया है इस लिए उसकी हर कथ्नी तथा करनी बुद्धि तथा विवेक के साथ है। अन्धा की तरह नहीं,जो ठोकरें खाता फिरे और टक्करें मारता हो,बल्कि उसके दिल पर तो ख़ुदा तआला का नुज़ूल होता है और हर क़दम पर वही उसका मार्गदर्शक और मुतकफ़्फ़िल बन जाता है। शैतान की शरारत का अन्धकार उसके निकट नहीं आ सकता,बल्कि वह ज़ुल्मत जल कर भस्म हो जाती है फिर उसे सब कुछ नज़र आता है। वह जो कुछ वर्णन करता है वह हक़ायक़ और मआरिफ़ होते हैं। वे जो हदीसों के अर्थ करता है। वे सही होती है,क्योंकि वह सीधा भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुन लेता है और उस की अपनी रिवायत होती है; और दूसरे लोगों को तेरह सौ वर्षों के माध्यम से कहना पड़ता है। फिर इन दोनों को आपस में क्या तुलना। उस का सारा भण्डार पवित्र मआरिफ़ (अनुभूति) और नूर होते हैं,परन्तु जो उससे शत्रुता करता है वह उसकी हर बात का इन्कार करता है और मानो वह ये शर्त कर लेता है कि हर नुक्ता मार्फ़त का इन्कार करेगा। और इस तरह पर वह हर बात का इन्कार करता रहता है। और उस की ईमानी इर्फ़ानी दीवार की ईंटें गिरनी शुरू हो जाती हैं। जब एक व्यक्ति सीधा मार्ग बता रहा है और मआरिफ़ और हक़ायक़ खोल-खोल कर वर्णन कर रहा है और दूसरा उसका इन्कार करता है। इस मुक़ाबला में अन्त में परिणाम क्या होगा? यही कि(दूसरी वर्णन की गई बात) वह क़ुरआन शरीफ़ की अस्थाओं के मजमूआ का इन्कार करता है। करता रहेगा और इसी लिए वह ख़ुदा तआला का भी इन्कार करने वाला हो जाता है और इसी तरह उसका ईमान छीना जाएगा।

अत: इस बात में ज़रा भी शक नहीं है कि औलिया अल्लाह के इन्कार से ईमान छीना

शेष पृष्ठ 10 पर

सबसे बड़ी चीज़ जिस के लिए क़ुरआन-ए-करीम आया है वह उसकी पूर्ण और मनमोहक शिक्षा है

एक यहूदी ने कहा कि आपकी शरीयत में एक बात देखकर आश्चर्य होता है कि इन्सानी ज़िंदगी का कोई हिस्सा नहीं जिस पर इस शरीयत ने रोशनी न डाली हो

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर: हिज्र आयत 3 رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं :

कुफ़्फ़ार की इस ख़ाहिश के सम्बन्ध में मुफ़स्सिरीन ने बेहस की है कि कब उन्होंने ख़ाहिश की कि वे मुस्लमान हों? कुछ ने मजबूर हो कर कहा कि वे उस वक़्त यह ख़ाहिश करेंगे जब मुस्लमानों की फ़तह हो गई। कुछ ने क़ियामत पर चस्पाँ किया है कि उस वक़्त कहेंगे कि काश हम मुस्लमान होते और कुछ ने इस से इस्लामी की प्रगति मुराद ली हैं अर्थात जब भी तरक़्क़ी होगी वे यह ख़ाहिश करेंगे।

यह अर्थ भी दरुस्त हैं। उन पर कोई आरोप नहीं क्योंकि जब दुश्मनी बिला-वजह होती है जैसा कि कुफ़्फ़ार अरब को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से थी तो दुश्मन की तरक़्क़ी पर इन्सान को अक्सर यह ख़्याल आ जाता है कि मैं उस की दुश्मनी न करता तो अच्छा था। आज फ़ायदा ही उठा लेता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुश्मनी केवल द्वेष की वजह से थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ैरमामूली सफ़लताओं से वे हसद के अवसर ही जाते रहे, इस लिए उनको बार हा ख़्याल आता होगा कि काश हम मुस्लमान होते।

इसी तरह जब वे बदर के स्थान पर क़तल हो रहे थे तो उनका दिल यही चाहता होगा कि काश हम मुस्लमान होते।

उद्देश्य इस्लाम की विजय प्राप्त दुश्मनों के दिलों में यह हसरतें ज़रूर पैदा करती होंगी कि काश

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला

बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 3)

इस्लाम में मर्द तथा औरत की बराबरी के बारे में शिक्षा

प्रश्न : एक महिला ने इस्लाम में मर्द और औरत में बराबरी के विषय में अपनी कुछ उलझनों का वर्णन कर के इस्लाम के मुख़्तलिफ़ हुक्मों के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में रहनुमाई की दरख़ास्त की। जिसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 11 अप्रैल 2016 ई. में इन उमूर के बारे में निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : आपके ख़त में वर्णित आपकी उलझनें इस्लामी तालीमात और फ़ित्रत इन्सानी को न समझने की वजह से पैदा हुई हैं। इस्लाम ने यह कही दावा नहीं किया कि मर्द और औरत हर मुआमला में बराबर हैं। इस्लाम क्या ख़ुद फ़ित्रत इन्सानी भी इस बात का इंकार करती है कि मर्द और औरत को हर लिहाज़ से बराबर क़रार दिया जाए।

हाँ इस्लाम ने यह तालीम ज़रूर दी है कि नेकियों के बजा लाने के नतीजा में जिस तरह अल्लाह तआला मर्दों को इनामात और अपने फ़ज़लों से नवाज़ता है उसी तरह वह औरतों को भी अपने इनामात और फ़ज़लों का वारिस बनाता है। इसलिए फ़रमाया

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ۔ سورة آل عمران: 196)

अनुवाद अत: उन के रब ने उन की दुआ क़बूल करली (और कहा) कि मैं तुम में से किसी अमल करने वाले का अमल कदापि ज़ाए नहीं करूँगा चाहे वे मर्द हो या औरत। तुम में से कुछ, कुछ से निसबत रखते हैं। अत: वे लोग जिन्हों ने हिज्रत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में दुख दीए गए और उन्होंने मारा गया और वे क़तल किए गए, मैं ज़रूर उनसे उनकी बुराईयों को दूर क्र दूंगा और ज़रूर उन्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करूँगा जिनके दामन में नहरें बेहती हैं। (यह) अल्लाह की ओर से सवाब के तौर पर (है) और अल्लाह ही के पास बेहतरीन सवाब है।

जहां तक मर्द और औरत की गवाही का ताल्लुक़ है तो ऐसे विषयों में जिन का मर्दों से ताल्लुक़ है और औरतों से सीधे ताल्लुक़ नहीं उनमें यदि गवाही के लिए निर्धारित मर्द मौजूद न हों तो एक मर्द के साथ दो औरतों को इसलिए रखा गया है कि चूँकि इन मामलों का औरतों से सीधे ताल्लुक़ नहीं लिहाज़ा यदि गवाही देने वाली औरत अपनी गवाही भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे। जबकि इस में भी गवाही एक औरत की ही है, केवल उसके ऐसे मामलो से ताल्लुक़ न होने की वजह से उसके भूल जाने के अनुमान के पेश-ए-नज़र एहतियातन दूसरी औरत उस की मदद के लिए और उसे बात याद कराने के लिए रख दी गई है। क़ुरआन-ए-करीम की आयात भी इसी मफ़हूम की समर्थन फ़र्मा रही है। इसलिए फ़रमाया

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ.....وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ

(سورۃالبقرہ: 283)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो जब तुम एक निर्धारित समय तक के लिए क़र्ज़ का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और अपने मुर्दों में से दो को गवाह ठहरा लिया करो। और यदि दो मर्द मयस्सर न हों तो एक मर्द और दो महिलाएं (ऐसे) गवाहों में से जिन पर तुम राज़ी हो। (यह) इस लिए (है) कि उन दो औरतों में से यदि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद करवा दे।

और जहां तक औरतों से सीधे सम्बन्धित मुआमलात का ताल्लुक़ है तो हदीस से साबित है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने केवल एक औरत की गवाही पर कि उसने उस शादीशुदा जोड़े में से लड़के और लड़की दोनों को दूध पिलाया था, अलैहदगी करवा दी। इसलिए हज़रत उक़बा बिन हरिस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने अबू उहाब बिन अज़ीज़ की लड़की से निकाह किया। इसके बाद एक औरत ने आकर वर्णन किया कि मैंने उक़बा को और इस औरत को जिससे उक़बा ने निकाह किया है दूध पिलाया है (अत: यह दोनों रज़ाई बहन भाई हैं, उनमें निकाह दरुस्त नहीं) उक़बा ने कहा कि में नहीं जानता कि तू ने मुझे दूध पिलाया है और न तू ने (इस से) पहले कभी इस बात की इत्तिला दी है। फिर उक़बा सवारी पर सवार हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास मदीना गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से (यह विषय) पूछा तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब जबकि यह बात कह दी गई है तुम किस तरह उसे अपने निकाह में रख सकते हो। अत: उक़बा ने उस औरत को छोड़ दिया। और उसने दूसरे व्यक्ति से निकाह कर लिया।

(सही बुख़ारी كتاب العلم بَاب الرِّحْلَةِ فِي الْمَسْأَلَةِ النَّازِلَةِ وَتَعْلِيمِ أَهْلِهِ)

जहां तक तलाक़ और खुला का ताल्लुक़ है तो इस में भी कोई फ़र्क़ नहीं। बल्कि यह इस्लाम का एहसान है कि उसने मर्द को तलाक़ का हक़ देने के साथ साथ औरत को खुला लेने का हक़ दिया। और इस में भी मर्द और औरत को बराबर के हुक़ूक़ दिए गए हैं। जब मर्द तलाक़ देता है तो उसे औरत को हर किस्म के माली हुक़ूक़ देने पड़ते हैं और मज़ीद यह कि जो कुछ वह बीवी को पहले माली लाभ पहुंचा चुका है उस में से कुछ भी वापस नहीं ले सकता। इसी तरह जब औरत अपनी मर्ज़ी से पति के किसी क़सूर के बग़ैर खुला लेती है तो उसे भी मर्द के कुछ माली हुक़ूक़ जिस प्रकार हक़ महर इत्यादि वापस करना पड़ता है, लेकिन यदि औरत के खुला लेने में मर्द की ज़्यादती साबित हो तो इस सूरत में औरत को यह ज़ायद फ़ायदा दिया गया है कि उसे महर का भी हक़दार क़रार दिया जाता जिस का फ़ैसला बहरहाल क़ज़ा समस्त हालात देखकर करती है।

अहल-ए-किताब से शादी करने, वली की ज़रूरत और मर्द के एक से अधिक शादियां कर सकने के मुआमलात में दरअसल औरत की हिफ़ाज़त, वक़ार और इज़्ज़त को मलहूज़ रखा गया है। औरत को अल्लाह तआला ने मर्द की निसबत साधारणता नाज़ुक बनाया और उस की फ़ित्रत में असर क़बूल करने का तत्व रखा है। अत: एक मुस्लमान औरत को अहल-ए-किताब मर्द से शादी करने से रोक कर उस के दीन की हिफ़ाज़त की गई है।

शादी के मुआमला में लड़की की रजामंदी के साथ उस के वली की रजामंदी रख कर अन्य बहुत से लाभों में से एक लाभ औरत को एक मददगार और मुहाफ़िज़ मुहय्या करना भी है कि औरत के ब्याहे जाने के बाद उस के ससुराल वाले इस बात से बाख़बर रहें कि औरत अकेली नहीं बल्कि उस की ख़बर रखने वाले मौजूद हैं।

औरत को एक वक़्त में एक ही शादी की इजाज़त देकर इस्लाम ने उस के सम्मान की हिफ़ाज़त की है और इन्सानी ग़ैरत और इन्सानी प्रकृति के ठीक अनुसार यह हुक्म दिया है।

जिस हदीस में औरतों के जहन्नुम में ज़्यादा होने का वर्णन है, वहां लोगों ने इस हदीस का अनुवाद समझने में ग़लती खाई है। इस हदीस का यह अर्थ कदापि नहीं कि जहन्नुम में औरतों की कसरत होगी। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया أُرِيتُ النَّارَ فَإِذَا أَكْثَرُ أَهْلِهَا النِّسَاءُ يَكْفُرْنَ۔

अर्थात मुझे जहन्नुम दिखाई जहां मैंने देखा कि उस में ऐसी औरतों की कसरत है जो अपने खाविंदों की नाशुक्रगुज़ार हैं। अर्थात जो महिलाएं अपने आमाल की वजह से जहन्नुम में मौजूद थीं उनमें से ज़्यादा वे महिलाएं थीं जो अपने खाविंदों की नाशुक्रगुज़ार थीं।

अत: एक तो इस हदीस का यह अर्थ कदापि नहीं कि जहन्नुम में महिलाएं मर्दों से ज़्यादा होंगी। दूसरा यहां उन औरतों के जहन्नुम में जाने की वजह भी बता दी कि वे ऐसी महिलाएं है जो बात बात पर ख़ुदा तआला के इन एहसानात की नाशुक्री करने वाली हैं, जो उनके खाविंदों के माध्यम से अल्लाह तआला ने उन पर किए हैं।

फिर उस के समक्ष अहादीस में नेक और पवित्रकुछ महिलाओं के पांव के नीचे जन्नत होने की भी तो ख़ुशख़बरी सुनाई गई है जो किसी मर्द के बारह में वर्णन नहीं हुई।

अतिरिक्त इसके इस्लाम ने मर्दों और औरतों के कुछ हुक़ूक़ कर्तव्य उनकी बनावट के अनुसार अलग-अलग वर्णन फ़रमाए हैं। मर्द को पाबंद किया कि वे मेहनत मज़दूरी

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया करते थे कि मैं अपने लश्कर तैयार करता हूँ और मैं नमाज़ में होता हूँ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़िलाफ़त के समय में तक़रीबन साढ़े दस वर्ष पर आधारित था .....

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विजय क्षेत्रों का कुल रकबा बाईस लाख इक्कावन हज़ार तीस मुरब्बा मील बनता है

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में एक बात जो बहुत स्पष्ट नज़र आती है वह यह है कि

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी समस्त व्यस्तता के अतिरिक्त मानो हर फ़तह के वक़्त मुस्लमानों के लश्कर में थे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

जंग-ए-नमारिक और कसकर, मार्का सकातियाँ, जंगे बारो समा और जंग जसर में पेश आने वाले वाक़ियात का संक्षिप्त वर्णन

चार मरहूमीन आदरणीय फतही अब्दुल सलाम मुबारक साहब, आदरणीया रज़ीया बेग़म साहिबा पत्नी ख़लील अहमद साहब मुबश्शिर पूर्व मुबल्लिग़ इंचार्ज कैनेडा और सीरालियोन,

आदरणीया सायरा सुलतान साहिबा पत्नी डाक्टर सुलतान मुबश्शिर साहब और आदरणीया ग़सून अल् मग़ज़्मानी साहिबा का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 जुलाई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन चल रहा था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में जो जंगें हुईं और जो विजय प्राप्त हुईं इस विषय में लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़िलाफ़त के समय क़रीबन साढ़े दस वर्षों पर आधारित था। यह तिथि तेराह हिज्री से तेईस हिज्री तक है। इस समय में होने वाली विजय का वर्णन करते हुए अल्लामा शिबली नुमानी अपनी किताब में लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विजय किए गए क्षेत्रों का कुल रकबा बाईस लाख इक्कावन हज़ार तीस मुरब्बा मील बनता है। इन विजय किए क्षेत्रों में यह क्षेत्र शामिल हैं। शाम-ए-मिस्र, ईरान और इराक़, ख़ोज़िस्तान, आरमीनीया, आज़र बाईजान, फ़ारस, किरमान, खुरासान और मकरान जिस में बलोचिस्तान का भी कुछ हिस्सा आता है।

(उद्धरित अल् फ़ारूक़ पृष्ठ 159 प्रकाशन इदारा इस्लामियात 2004 ई.)

इस्लामी जंगों और विजय प्राप्त का सिलसिला तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में शुरू हो गया था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में, (हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में) शाम और इराक़ में इस्लामी फ़ौजों जिहाद में व्यस्त थीं और एक समय में कई मोर्चों पर जिहाद जारी था और फिर यह सिलसिला चलता गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में भी इसी तरह जारी रहा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में एक बात जो बहुत स्पष्ट नज़र आती है वह यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी समस्त व्यस्तता के अतिरिक्त मानो हर फ़तह के वक़्त मुस्लमानों के लश्कर में मौजूद थे। जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने समय ख़िलाफ़त में किसी जंग में भी नियमित हिस्सा नहीं लिया जबकि मुस्लमान कमांडरों को लश्कर के हवाले से समस्त हिदायात मदीना से आप रज़ियल्लाहु अन्हो भजवाते या जहां भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो उपस्थित होते वहां उनसे समपर्क में रहते बल्कि कुछ जंगों के हालात से तो मालूम होता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की मुस्लमान सिपहसालारों से पत्राचार दिनाना की बुनियाद पर जारी रही और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना में बैठ कर मुस्लमानों को अपने लश्करों को तर्तीब देने की हिदायात दीं और उनको उन इलाक़ों के बारे में ऐसे बताया, इस तरह की हिदायात दीं मानो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने इन इलाक़ों का नक़्शा मौजूद था या वे क्षेत्र हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने थे। इमाम बुख़ारी ने सही बुख़ारी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सम्बन्ध में लिखा है। وَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ إِنِّيْ لَأُجَهِّزُ جَيْشِيْ وَأَنَا فِي الصَّلَاةِ (सही अल् बुख़ारी, किताब अल् अमल फिस्सालात, बाब तफ़क्कुर रिजाल अल् शय फिस्सालात)

कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया करते थे कि मैं अपने लश्कर तैयार करता हूँ और मैं नमाज़ में होता हूँ। अर्थात आप रज़ियल्लाहु अन्हो इतनें चिंतन में होते थे कि नमाज़ के समय में भी इस्लामी फ़ौजों की मंसूबा बंदी और प्लैनिंग का काम जारी रहता था। इस समय दुआ भी करते रहते होंगे। यही वजह है कि हमें बार बार नज़र आता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की हिदायात की पैरवी करते हुए मुस्लमान फ़ौजों ने मुश्किल से मुश्किल हालात में भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से विजय प्राप्त प्राप्त कीं।

सय्यद मीर महमूद अहमद साहब ने भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में एक मक़ाला लिखा था और इस से भी हमारे नोटिस तैयार करने वालों ने सहायता ली है। रिसर्च सेल ने कुछ नोटिस लिए हैं लेकिन बहरहाल ये असल में से भी चैक किए गए हैं और ठीक हैं। विजय प्राप्त ईरान और इराक़ के बारे में वह लिखते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में अहल-ए-फ़ारस के साथ जंग जारी थी कि उस समय हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बीमार हो गए जिसकी वजह से इस्लामी फ़ौजों को पैग़ामात मौसूल होने में देरी हो रही थी। इसलिए हज़रत मुसन्नी इस्लामी फ़ौज में अपने नायब निर्धारित करके ख़ुद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए ताकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जंग के हालात से सूचित करें और मज़ीद सहायता का निवेदन करें। हज़रत मुसन्नी मदीना पहुंचे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को वाक़ियात की सूचना दी। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और यह वसीयत फ़रमाई कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ! मैं जो कुछ कहता हूँ उसे ग़ौर से सुनो फिर इस पर अमल करना। आज सोमवार का दिन है मैं आशा करता हूँ कि मैं आज ही फ़ौत हो जाऊँगा, यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़र्मा रहे हैं। यदि मैं फ़ौत हो जाऊं तो शाम होने से पूर्व लोगों को जिहाद का प्रोत्साहन देकर मुसन्नी के साथ भेज देना और यदि मेरी वफ़ात रात तक टल हो जाए तो सुबह से पहले मुस्लमानों को जमा कर के मुसन्नी के साथ कर देना। मेरी मौत की मुसीबत ख़ाह कितनी ही बड़ी हो वह तुम्हें दीन के अहकाम और ख़ुदा तआला के अहकाम की तामील से कदापि पीछे न रहने दे। तुमने देखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के अवसर पर मैंने क्या-किया था हालाँकि लोगों को और मख़लूक़ को इस जैसी मुसीबत कभी पेश नहीं आई थी। ख़ुदा की क़सम! यदि मैं उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की तामील में ज़रा देरी जायज़ रखता तो ख़ुदा हमको ज़लील कर देता। हमको सज़ा देता और मदीना में आग के शोले भड़क उठते। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मसनद-ए-ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होते ही इस वसीयत की तामील में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तदफ़ीन से अगले दिन लोगों को जमा किया। बैअत-ए-ख़िलाफ़त के लिए समस्त स्थानों से बेशुमार आदमी आए हुए थे और तीन दिन तक उनका आना बंधा रहा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अवसर को ग़नीमत समझा और मजमा-ए-आम में जिहाद का उपदेश दिया क्योंकि अरब क़दीम से ईरानी साम्राज्य की शान-ओ-शौकत और ज़बरदस्त फ़ौजी ताक़त से भयभीत रहते थे और लोगों का आम

तौर पर-ख़याल था कि इराक़ हुकूमत फ़ारस का पाया तख़्त है और वे हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के बग़ैर फ़तह नहीं हो सकता इसलिए सब ख़ामोश रहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कई दिन तक उपदेश दिया लेकिन कुछ असर न हुआ। आख़िर चौथे दिन इस जोश से तक़रीर की कि हाज़िरीन के दिल दहल गए और लोगों की ईमानी हरारत जोश में आई और हज़रत अबू उबैदाा बिन मसऊद सक़्फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हो आगे बढ़े और اَنَا لِهٰذَا का नारा मारा कि मैं इस के लिए हाज़िर हूँ। और इस जिहाद के लिए अपना नाम पेश किया। उनके बाद हज़रत साद बिन उबेद: रज़ियल्लाहु अन्हो और सलीत बिन केस सामने आए। इन लोगों का सामने आना था कि ईमानी जोश मुस्लमानों के दिलों में मोजज़िन हो गया और वे बड़े जोश-ओ-ख़ुरोश से बढ़ बढ़कर जिहाद-ए-इराक़ के लिए अपना अपना नाम पेश करने लगे। इसके पूर्व इराक़ी फ़ौजों की कमान हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में थी परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने आख़िरी समय में शामी जंगों की एहमीयत के पेश-ए-नज़र उनको शाम जाने का हुक्म दे दिया था और अब इराक़ की इस्लामी फ़ौज की कमान हज़रत मुसन्नी बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो कर रहे थे। इस अवसर पर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मुस्लमानों को इराक़ की जंगों के लिए अपना नाम पेश करने की दावत दे रहे थे हज़रत मुसन्नी भी मदीना तशरीफ़ लाए हुए थे। आपने भी एक वलवला अंगेज़ तक़रीर की और कहा लोगो! यह मोर्चा बहुत सख़्त और कठिन न समझो। हमने फ़ारस वालों से लड़ाई की और उन पर ग़लबा पाया और इन शा अल्लाह इसके बाद भी हमारी ही फ़तह होगी। ये सारी तक़रीरें सुनने के बाद अब मदीना और इस के करीब से इराक़ी जंगों में शमूलीयत के लिए मुजाहिदीन का लश्कर तैयार हुआ । तबरी और बलाज़री ने इस लश्कर की संख्या एक हज़ार बताई है और किताब अखबारुल तिवाल के मुसन्निफ़ अल्लामा अबू हनीफ़ा दीनवरी पाँच हज़ार संख्या बताते हैं। लगता है कि लश्कर की मदीना से रवानगी के वक़्त संख्या एक हज़ार थी परन्तु जंग के मोर्चा तक पहुंचते-पहुंचते यह संख्या पाँच हज़ार तक जा पहुंची क्योंकि बलाज़री और अबूहनीफ़ा ने स्पष्टीकरण किया है कि अमीर-ए-लश्कर रास्ता में जिस अरब क़बीला के पास से गुज़रते उसे लश्कर में शमूलीयत की दावत देते। अब यह प्रश्न भी पैदा हुआ कि इस लश्कर का अमीर कौन हो? जबकि हज़रत मुसन्नी थे लेकिन जो नया लश्कर तैयार हुआ था उस का अमीर कौन हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की पारखी नज़र ने अबू उबैदा सक़फ़ी का इंतिस्वप्न किया। कुछ लोगों पर यह बात कष्टदायक गुज़री कि سَابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْن मुहाजिरीन और अंसार को छोड़ कर जिन्हों ने अपने ख़ून से इस्लाम के पौधे को सींचा था एक ऐसे व्यक्ति को अमीर बना दिया है जो बाद में आने वाला है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि सहाबा को यदि कोई इमतियाज़ी स्थान प्राप्त है तो केवल इसलिए कि वह इस्लाम की ख़िदमत में पेश पेश रहे और दीन की तरफ़ से प्रतिरोध के लिए बढ़ चढ़ के दुश्मन से लड़ाई की परन्तु अब इस अवसर पर पीछे रह कर उन्होंने अपना यह हक़ खो दिया। इसलिए इस अवसर पर जो व्यक्ति इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए सबसे पहले सामने आया वही इमारत का हक़दार है। हज़रत अबू उबैदाा के बाद साद बिन उबैदाा और सलीत बिन केस ने इराक़ी जंगों की दावत के अवसर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ पर लब्बैक कहा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन दोनों से सम्बोधित हो कर फ़रमाया कि यदि तुम मेरी आवाज़ पर लब्बैक कहने में सबक़त इख़तियार करते तो क़बूल-ए-इस्लाम में सबक़त के कारण मैं तुम्ही को यह कमान सौंपता। जबकि सलीत बिन केस पर अबू उबैदा को प्राथमिकता देने के सम्बन्ध में इलावा पहली वजह के हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बात का भी इज़हार फ़रमाया था कि इस काम के लिए किसी धीमे व्यक्ति की ज़रूरत है जो तहम्मुल और सोच समझ कर जंग की तैयारी करे परन्तु सुलैत बिन क़ैस फ़ौजी पेशक़दमी के सिलसिला में बड़े जल्दबाज़ साबित हुए हैं। जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पद सम्मान करते हुए अबू उबैदा को यह अहम कमान सौंपी थी लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बुज़ुर्ग सहाबा की क़दीमी ख़िदमात और पिछले अनुभवत को नज़रअंदाज कर देना भी मुनासिब न था इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू उबैदा सक़्फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हो को ताकीद भी कर दी थी कि वह सहाबा के मश्वरे से लाभान्वित हो और प्रशासनिक मामलो में उनकी राय पर चलें। ये मुख़्तलिफ़ तारीख़ी पुस्तकें में मिलता है। तारीख़--ए तिबरी में यह सारा वाक़िया है जिससे यह लिया गया है।

(तारीख़े इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मक़ाला अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहब, पृष्ठ 7 से 9) (तारीख़े तिबरी, भाग 2, हिस्सा 2 अनुवाद, पृष्ठ 194 प्रकाशन नफ़ीस अकैडमी कराची 2004 ई.) (तारीख़े तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 334 और 360-361दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2012 ई.)(अख़बार अल् तवाल अज़ अबू हनीफा दिनूरी, पृष्ठ165-166 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2001ई.) (فتوح البلدان علامه بلاذری، صفحه 350، مطبوعه مؤسسة المعارف بیروت 1987ء)(ماخوذ از سیرت امیر المومنین عمر بن خطاب از الصلابی، صفحه353، 354،دارالمعرفه بیروت 2007ء)(ماخوذ ازالفاروق از شبلی نعمانی، صفحه78،79ادارہ اسلامیات 2004ء)

तेराह हिज्री में एक जंग हुई जो जंग-ए-नमारिक और जंग-ए-कसकर कहलाती है। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो के लश्कर लेकर रवाना होने से पूर्व ही हज़रत मुसन्नी वापस हिरा इराक़ की क़दीमी अरबी हुकूमत का पाया तख़्त था और फुरात के पश्चिम में इस स्थान पर स्थित था जहां बाद में कूफ़ा आबाद हुआ वहां चले गए और बदस्तूर के अनुसार अपनी फ़ौज की नेतृत्व किया लेकिन जल्द ही ऐसी सूरत-ए-हाल पैदा हो गई कि हज़रत मुसन्नी को अपनी फ़ौजों समेत पीछे हटना पड़ा। इस की तफ़सील यूं है कि ईरानी दरबार सरदारों और अमीरों के आपसी झगड़े और मतभेद का स्थान बना हुआ थाकि एक नई और ज़बरदस्त शख़्सियत का ज़हूर हुआ जो खुरासान के गवर्नर फ़र्रुखज़ाद के बेटे रुस्तम की थी। ईरानी दरबार की तरफ़ से रुस्तम काले और गौरों का मालिक बना दिया गया और वे सब सलतनत के सदस्य जो उपद्रव और झगड़ों से देश की ताक़त कमज़ोर करने का कारण बने हुए थे अब रुस्तम की इताअत का दम भरने लगे। रुस्तम एक बहादुर और साहब-ए-तदबीर इन्सान था। उसने अनान का नेतृत्व हाथ में लेते ही मुस्लमानों के विजय क्षेत्रों में अपने कारिंदे भिजवा कर बग़ावत करवा दी और फुरात के जुड़े हुए ज़िलों में मुस्लमानों के ख़िलाफ़ सख़्त जोश भर दिया और हज़रत मुसन्नी के मुक़ाबला के लिए एक लश्कर रवाना किया। इन हालात को देख कर हज़रत मुसन्नी ने कुछ पीछे हट जाना मुनासिब समझा और हिरा को छोड़ कर ख़फ़्फ़ान (कूफ़ा के क़रीब एक स्थान है जगह) आकर क़ियाम पज़ीर हो गए। उधर रुस्तम बराबर फ़ौजी सरगर्मीयों में व्यस्त था। उसने ज़बरदस्त लश्कर तैयार कर के दो मुख़्तलिफ़ रास्तों से मुस्लमानों के मुक़ाबले के लिए रवाना किए। एक लश्कर जाबान के नेतृत्व में था जो स्थान नमारिक में उतरा, नमारिक भी इराक़ में कूफ़ा के क़रीब एक जगह है और दूसरा लश्कर नर्सी के नेतृत्व में कसकर की तरफ़ रवाना किया गया। किसकर बग़दाद और बस्रा के मध्य दजला के क़रीब ग़र्बी किनारे पर एक शहर है जिसके आसार पर वासित का शहर आबाद है। हज़रत मुसन्नी को मदीना से आए हुए अभी एक महीना ही हुआ था कि हज़रत अबू उबैदा मुजाहिदीन का लश्कर लिए हुए ख़फ़्फ़ान में उनसे आ मिले। ख़फ़्फ़ान भी कूफ़ा के क़रीब एक स्थान का नाम है। और कुछ हज़ार मुस्लमानों का यह लश्कर उस वक़्त जंग के मौर्चे पर पहुंचा जब इराक़ में आम सूरत-ए-हालात मुस्लमानों के लिए ख़ुशकुन नहीं थी और विजय किए गए ज़िले एक-एक कर के उनके हाथों से निकल रहे थे। हज़रत अबू उबैदा ने ख़फ़्फ़ान में इजतिमा लश्कर की उद्देश्य से कुछ दिन क़ियाम के बाद नमारिक़ का रुख किया। वहां एक ज़बरदस्त ईरानी लश्कर एक बूढ़े तजरबाकार ईरानी सिपहसालार जाबान की सरकर्दगी में ख़ेमा-ज़न था। हज़रत अबू उबैदा ने लश्कर का संगठन किया। रिसाला हज़रत मुसन्नी के नेतृत्व में दिया। मैमना की कमान वालिक बिन जिदारह को दी और मयेसरा का कमांडर अम्र बिन हयशम को निर्धारित किया। ईरानी लश्कर के दोनों बाज़ुओं की कमान जुशनस माह और मर्दान शाह कर रहे थे। इस्लामी अख़लाक़ का जो नमूना इस जंग में पेश हुआ इस पर मीर महमूद अहमद साहब ने अपना तबसरा किया हुआ है कि इस्लामी अख़लाक़ का एक नमूना जो हमें नज़र आता है यह है कि नमारिक़ के स्थान पर ज़बरदस्त युद्ध हुआ और ईरानी लश्कर ने पराजय खाई। ईरानी लश्कर का सिपहसालार जाबान ज़िंदा गिरफ़्तार कर लिया गया परन्तु मत्र विन फ़िज़ा जिन्हों ने जाबान को गिरफ़्तार किया था उसे पहचानते नहीं थे। जाबान ने उनकी लाइलमी से फ़ायदा उठा कर उनको फ़िद्या दिया और रिहाई प्राप्त कर ली। कुछ देर बाद मुस्लमानों ने पुन: जाबान को गिरफ़्तार कर लिया और हज़रत अबू उबैदा के पास लाए और आपको बताया कि जाबान को ईरानी लश्कर में क्या पोज़ीशन प्राप्त है परन्तु हज़रत अबू उबैदा ने यह बर्दाश्त नहीं किया कि एक व्यक्ति जिसको एक मुस्लमान सिपाही एक दफ़ा फ़िद्या लेकर रिहा कर चुका है पुन: क़ैदी बना लिया जाए। लोगों ने पुन: इसरार किया कि जाबान को तो मानो बादशाह की पोज़ीशन प्राप्त है। आपने फ़रमाया कि मैं तो फिर भी वादा तोड़ने का मुर्तक़िब नहीं हो सकता। इसलिए रिहा कर दिया गया। इस वाक़िया से इस भावना की अख़लाक़ पर रोशनी पड़ती है जो इस्लामी फ़ौजों का लाहे-ए-अमल होता था और मालूम होता है कि किस तरह मुस्लमान ज़बरदस्त जंगी फ़वायद के हुसूल के लिए भी अख़लाक़ का दामन हाथ से नहीं छोड़ते थे।

(मक़ाला "तारीख़े इस्लाम बा अहद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो" आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहब, पृष्ठ 9 से 12) (तारीख़े तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 362-363 दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2012 ई.) (मोअज्जमूल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 351 भाग 2 पृष्ठ 434 दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत)

फिर मार्का सकातिया है जो तेराह हिज्री में हुआ। नमारिक़ के मार्का से पराजय खा

कर ईरानी लश्कर किस की तरफ़ भागा जहां ईरानी कमांडर नर्सी पहले से एक लश्कर जरार लिए हुए मुस्लमानों के मुक़ाबला के लिए तैयार था। अबू उबैदा उस के मुक़ाबले के लिए कसकर की तरफ़ बढ़े। नर्सी जो कसकर में ईरानी लश्कर का सिपहसालार था ईरानी सदस्यों की सलतनत में विशेष इमतेयाज़ी स्थान रखता था और वह और उसके लश्कर के दोनों बाज़ुओं के कमांडर बिनदवीय और तीराविया के सासानी बादशाहों के क़रीबी और गहरे रिश्तेदारों में से थे। ईरानी दरबार को नमारिक़ में पराजय की ख़बर पहुंच चुकी थी और रुस्तम नर्सी के लिए मज़ीद इमदादी फ़ौजों के भिजवाने का बंद-ओ-बस्त कर रहा था कि हज़रत अबू उबैदा ने अपनी फ़ौज की नक़ल-ओ-हरकत को तेज़ करते हुए नर्सी के लश्कर को इस की इमदादी फ़ौज के आने से पूर्व ही कसकर के ढलान वाले इलाक़ों में जा लिया और स्कातिया के नाम से जो प्रसिद्ध स्थान थी इस पर हमला कर दिया। स्कातिया के मैदान में एक ज़बरदस्त युद्ध के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुस्लमानों को फ़तह हुई। बड़े युद्ध के बाद हज़रत अबू उबैदाा ने कसकर के इर्द-गिर्द के क्षेत्र में मुख़्तलिफ़ जगहों पर जमा शूदा दुश्मन के मुक़ाबले के लिए इस्लामी दस्ते भी भेजना शुरू कर दिए।

(मक़ाला "तारीख़े इस्लाम ब अहद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो'' आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहब पृष्ठ 13-12) (तारीख़े तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 364 दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2012 ई.)

फिर जिंग-ए-बारु समा का वर्णन है। यह भी तेराह हिज्री की है। बारु समा कसकर और सकातियां के मध्य एक स्थान था जहां पर ईरानी जरनैल जालीनूस से मुक़ाबला हुआ जो जाबान की सहायता के लिए आया था। रुस्तम ने नर्सी की सहायता के लिए एक ईरानी कमांडर की नेतृत्व में एक लश्कर कसकर की तरफ़ रवाना किया था। अबू उबैदा को इस की सूचना मिल चुकी थी और उन्होंने कमाल-ए-होशियारी से काम लेकर जालीनूस के लश्कर की आमद से पहले ही नर्सी की फ़ौजों से टक्कर ले ली और इस को पराजय देकर दुश्मन की फ़ौजी ताक़त को सदमा पहुंचा दिया था। अब जालीनूस बारूसमा के क्षेत्र में बाकुस यासा के स्थान पर लश्कर अंदाज़ हुआ। बस्रा और कूफ़ा के मध्य की बस्तीयों को अर्ज़-ए-सवाद कहा जाता था और बारु समा और कुस्यासा इन बस्तीयों में से दो बस्तीयां हैं। अबू उबैदा बाक़ुसयासा पहुंचे और छोटी सी लड़ाई के बाद ईरानी फ़ौजों ने पराजय खाई और जालीनूस मैदान से भाग खड़ा हुआ और अबू उबैदा ने वहां क़ियाम कर के इर्द-गिर्द के इलाक़ों पर मुकम्मल क़बज़ा कर लिया। तिबरी के लेखक जो है यह उनका वर्णन है। बलाज़री ने लिखा है कि जालीनूस से सुलह हो गई थी जबकि बाद के मुअर्रिख़ीन में इब्ने ख़ुलद और इब्ने असीर ने तिबरी की ताईद की है।

(मक़ाला "तारीख़े इस्लाम बअहद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो'' आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहब, पृष्ठ 14)(उद्धरित सीरत अमीरुल मोमनीन उमर बिन ख़त्ताब सलाबी, पृष्ठ 357 दारुल मारूफ बेरूत 2007)(मोअजमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 261 दारुल अहया तुर्रास अल् अरबी बेरूत वल मुन्जिद ज़ेरे माद्दा ' 'साद'')

जंग जसर का कुछ वर्णन कुछ अरसा पहले हो चुका है यहां भी यह ज़रूरी है वर्णन करता हूँ। जंग-ए-जस्र, यह भी तेराह हिज्री में हुई। दरिया-ए-फ़ुरात के किनारे मुस्लमानों और ईरानियों के मध्य लड़ी गई थी। मुस्लमानों की तरफ़ से लश्कर के सिपहसालार हज़रत अबू उबैदा सक़फ़ी थे जबकि ईरानियों की तरफ़ से बाहमन जाज़विया सिपहसालार था। मुस्लमान फ़ौज की संख्या दस हज़ार थी जबकि ईरानियों की फ़ौज में तीस हज़ार फ़ौजी और तीन सौ हाथी थे। दरिया-ए-फ़ुरात के मध्य में हायल होने की वजह से दोनों गिरोह कुछ अरसा तक लड़ाई से रुके रहे यहां तक कि फ़रीक़ैन की बाहमी रजामंदी से फुरात पर जसर अर्थात एक पुल तैयार किया गया। इसी पुल की वजह से इस को जंग जसर कहा जाता है। जब पुल तैयार हो गया तो बहमन जाज़विया ने हज़रत अबू उबैदा को कहला भेजा कि तुम दरिया पार कर के हमारी तरफ़ आओगे या हमें पार करने की आज्ञा दोगे। हज़रत अबू उबैदा की राय थी कि मुस्लमानों की फ़ौज दरिया उबूर कर के मुख़ालिफ़ गिरोह से जंग करे जबकि लश्कर के सरदार जिनमें हज़रत सुलैत भी थे उनकी राय उसके ख़िलाफ़ थी लेकिन हज़रत अबू उबैदा ने दरिया-ए-फ़ुरात को पार कर के फ़ारस वालों के लश्कर पर हमला कर दिया। थोड़ी देर तक लड़ाई ऐसे ही चलती रही कुछ देर बाद बहमन जाज़विया ने अपनी फ़ौज को मुंतशिर होते देखा तो उसने हाथियों को आगे बढ़ाने का हुक्म दिया। हाथियों के आगे बढ़ने से मुस्लमानों की सफ़ें बे-तरतीब हो गईं और इस्लामी लश्कर इधर उधर हटने लगा। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को कहा कि हे अल्लाह के बंदो! हाथियों पर हमला करो और उनकी सूंडें काट डालो। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो यह कह कर ख़ुद आगे बढ़े और एक हाथी पर हमला कर के इस की सूंड काट डाली। बाक़ी इस्लामी लश्कर ने भी यह देखकर तेज़ी से लड़ाई शुरू कर दी और कई हाथियों की सूंडें और पांव काट कर उनके सवारों को क़तल कर दिया। संयोंग से हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो एक हाथी के सामने आ गए। आपने वार कर के इस की सूंड काट दी परन्तु आप इस हाथी के पांव के नीचे आ गए और दब कर शहीद हो गए।

तारीख तिबरी की एक रिवायत में है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी दौमा ने जंग से पूर्व एक स्वप्न देखा था कि एक व्यक्ति आसमान से एक बर्तन में जन्नत का एक प्याला लाया जिसको हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो र जब्र बिन अबू उबैदा ने पिया है। इसी तरह उनके ख़ानदान के कुछ लोगों ने भी पिया है। दौमा ने यह स्वप्न अपने पति से वर्णन की। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इस स्वप्न की ताबीर शहादत है। इस के बाद हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों को वसीयत की कि यदि मैं शहीद हो जाऊं तो जबर सिपहसालार होंगे और यदि वे भी शहीद हो जाएं तो अमुक अमुक व्यक्ति सिपहसालार होगा। इसलिए जिस जिस व्यक्ति ने स्वप्न में इस बर्तन से मशरूब पिया था उनको हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने तरतीब से सिपहसालार निर्धारित कर दिया और फिर फ़रमाया कि यदि अबुल क़ासिम भी शहीद हो जाएं तो फिर हज़रत मुसन्नी तुम्हारे सिपहसालार होंगे। दौमा का यह स्वप्न शब्द शब्द पूरा हुआ। इस जंग में हज़रत अबू उबेद: रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद तरतीब से वर्णन किए गए छ: व्यक्ति एक एक कर के नेतृत्व का झंडा अपने हाथ में लेते चले गए और शहीद होते चले गए। आठवां व्यक्ति हज़रत मुसन्नी थे जिन्हों ने इस्लामी झंडे को लेकर पुन: एक पुरजोश हमले का इरादा किया लेकिन इस्लामी लश्कर की सफ़ें बे-तरतीब हो गई थीं और लोगों ने मुसलसल सात अमीरों को शहीद होते देखकर भागना शुरू कर दिया था जबकि कुछ दरिया में कूद गए थे। हज़रत मुसन्नी और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथी मर्दानगी से लड़ते रहे। अंतत: हज़रत मुसन्नी ज़ख़मी हो गए और आप लड़ते हुए दरिया-ए-फ़ुरात पार करके वापिस आ गए। इस वाक़िया से मुस्लमानों को बहुत ज़्यादा नुक़्सान हुआ। मुस्लमानों के चार हज़ार आदमी शहीद हुए जबकि ईरानियों के छ: हज़ार फ़ौजी मारे गए। यह पराजय मुस्लमानों के लिए ज़्यादा देर तक हानिकारक परिणाम पैदा करने का कारण बनती परन्तु ख़ुशक़िसमती यह हुई कि क़ुदरती अवसर ऐसा पैदा हो गया कि दुश्मन मुस्लमानों का पीछा नहीं कर सका क्योंकि ख़ुद ईरानी सलतनत के सदस्यों में आपसी मतभेद पैदा हो जाने की वजह से बहमन जाज़विया को वापिस जाना पड़ा। इब्ने असीर ने इस की वजह यह लिखी है कि ख़ुद ईरानी दारुल हकूमत मदायन में सलतनत के सदस्यों के एक फ़रीक़ ने रुस्तम के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी थी। (मक़ाला "तारीख़े इस्लाम बअहद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो'' आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर पृष्ठ 18 से 21) (तिथि तिबरी अनुवाद, भाग 2, हिस्सा 2, पृष्ठ 229 नफ़ीस अकैडमी कराची 2004 ई.)(उद्धरित तिथि इब्ने ख़ुलदून अनुवाद, भाग 3 हिस्सा अव्वल, पृष्ठ 270 से 273 दारुल इशात कराची 2003 ई.) (अल् कामिल फ़िल तारीख़ लेइब्ने असीर, पृष्ठ 311 बेतुल अफ़कार दोलिया)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी जसर की जंग के बारे में कुछ वर्णन फ़रमाया है कि

"सबसे बड़ी और भयावह पराजय जो इस्लाम को पेश आई वह जंग-ए- जसर थी। ईरानियों के मुक़ाबला में मुस्लमानों का ज़बरदस्त लश्कर गया। ईरानी सिपहसालार ने दरिया पार अपने मोर्चे बनाए और उनकी प्रतीक्षा की। इस्लामी लश्कर ने जोश में बढ़कर उन पर हमला किया और धकेलते हुए आगे निकल गए परन्तु यह ईरानी कमांडर की चाल थी। उसने एक फ़ौज बाज़ू से भेज कर पुल पर क़बज़ा कर लिया और ताज़ा हमला मुस्लमानों पर कर दिया। मुस्लमान मस्लेहतन पीछे लौटे परन्तु देखा कि पुल पर दुश्मन का क़बज़ा है। घबरा कर दूसरी तरफ़ हुए तो दुश्मन ने शदीद हमला कर दिया और मुस्लमानों की बड़ी संख्या दरिया में कूदने पर मजबूर हो गई और हलाक भी हो गई। मुस्लमानों का यह नुक़्सान ऐसा ख़तरनाक था कि मदीना तक इस से हिल गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना वालों को जमा किया फ़रमाया : अब मदीना और ईरान के मध्य कोई रोक बाक़ी नहीं। मदीना बिल्कुल नंगा है और संभव है

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

कि दुश्मन कुछ दिनों तक यहां पहुंच जाए। इस लिए मैं ख़ुद कमांडर बन कर जाना चाहता हूँ। बाक़ी लोगों ने तो इस तजवीज़ को पसंद किया परन्तु हज़रत अली मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि यदि ख़ुदा-ना-ख़ासता आप रज़ियल्लाहु अन्हो काम आ गए तो मुस्लमान तित्र बित्तर हो जाएंगे और उन का शीराज़ा बिल्कुल मुंतशिर हो जाएगा इस लिए किसी और को भेजना चाहीए आप ख़ुद तशरीफ़ न ले जाएं। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो को जो शाम में रोमियों से जंग में व्यस्त थे लिखा कि तुम जितना लश्कर भेज सकते हो भेज दो क्योंकि इस वक़्त मदीना बिल्कुल नंगा हो चुका है और यदि दुश्मन को फ़ौरी तौर पर न रोका गया तो वह मदीना पर क़ाबिज़ हो जाएगा।"

(मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के सालाना इजतिमा में कुछ अहम हिदायात, अनवारुल उलूम, भाग 22 पृष्ठ56-57)

यह वर्णन अभी चल रहा है इन शा अल्लाह आगे वर्णन करूँगा। यह तो इस जंग के बारे में था। बाक़ी जंगों की भी मज़ीद तफ़सीलात आगे आयेंगी ।

अब मैं इस वक़्त कुछ मरहूमीन का भी वर्णन करना चाहता हूँ जिनके जनाज़े भी पढ़ाऊंगा। इन शा अल्लाह। इस में से पहला वर्णन फतही अब्दुल सलाम साहब का है। उनका पूरा नाम फतही अब्दुल सलाम मुबारक साहब है। यह मिस्र थे। 75 वर्ष की आयु में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पिता नक़्शबंदी तरीक़े के पैरोकार थे। उन्होंने अपने एक बच्चा को धार्मिक शिक्षा के लिए वक़्फ़ करने का अह्द किया और फतही साहब को इस के लिए चुना गया। फतुही साहब ने दस वर्ष की आयु में क़ुरआन पूर्ण हिफ़्ज़ कर लिया। क़ुरआन-ए-करीम से इशक़ की वजह से फतही साहब के पिता ने भी उनके साथ ही क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ करना शुरू कर दिया और मुकम्मल क़ुरआन हिफ़्ज़ किया। बाद में ख़ुदा का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि उनके ने 88 वर्ष की आयु में बैअत भी कर ली। क़ुरआन हिफ़्ज़ करने के बाद फतही साहब ने अल् अज़हर के तहत एक हाई स्कूल से विशेष सफ़लता के साथ शिक्षा मुकम्मल की। फिर क़ाहिरा यूनीवर्सिटी से इंजीनीयरिंग में डिग्री ली। विद्यार्थी के समय में अध्यन के बेहद शौक़ की वजह से अपने जेब ख़र्च से पैसे बच्चा बचा कर पुस्तकें ख़रीदते और अध्यन करते। फिर मिस्र की एयर फ़ोर्स में अफ़्सर निर्धारित हुए। फ़ौज में उन पर यह आरोप लगा कि आप कुछ इन्क़िलाबी इस्लामी तहरीकों के गुप्त यौजनाओ में शामिल हैं हालाँकि आप उनके मुख़ालिफ़ थे और उनकी इस्लाह के लिए कार्य कर रहे थे। बहरहाल इस आरोप में एक अरसा जेल में गुज़ारने के बाद आपको बरी कर दिया गया। इसके बाद आप इराक़ चले गए। कुछ अरसा वहां बतौर इंजीनियर काम किया। 1991 ई. में इराक़ में जंग के समय उन्होंने बड़ा ख़तरनाक वक़्त गुज़ारा। जिस क्षेत्र में आप रहते थे वहां एक रात में दस बम गिरे। आप अपनी फ़ैमिली को लेकर दुआओं में व्यस्त रहे और अल्लाह तआला ने हैरत-अंगेज़ तौर पर उनको महफ़ूज़ रखा। फिर आप अरदन आ गए और मोअतज़िली फ़िर्क़ा के साथ शामिल हो गए। फिर मिस्र आए और किसी क़दर अहल-ए-क़ुरआन की तरफ़ मायल थे कि जमाअत से परिचय हुआ। अहमदियत में आपको समस्त परेशानकुन मसायल का हल मिला तो आपने बैअत कर ली। बैअत का वाक़िया फतही साहब ख़ुद वर्णन करते हैं कि 1995 ई. मैं मिस्र में इवने ख़ुलदून नामी एक इलमी मर्कज़ में मुख़्तलिफ़ लैक्चरज़ होते थे। वहां मुझे भी कई बार लैक्चर देने और मुख़्तलिफ़ विषयों पर प्रश्न के उत्तर करने की तौफ़ीक़ मिली। 1998 ई. में आदरणीय मुस्तफ़ा साबित साहब ने इस मर्कज़ में मेरा लैक्चर सुना तो बहुत तारीफ़ की और अपने घर दावत दी जहां मुझे तीन घंटे की एक वीडीयो कैसेट दिखाई जिसमें आदरणीय हिलमी शफ़ी साहब मरहूम ने दज्जाल के सम्बन्ध में अहादीस में वर्णित विषयों की एक ऐसी तावील वर्णन की जो मुझे बहुत पसंद आई। फतही साहब कहते हैं कि मेरे पूछने पर साबित साहब मरहूम ने बताया कि यह तफ़सीर जो है ये क़ातिल-ए-दज्जाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की है। कहते हैं कि 1999 ई. में मुस्तफ़ा साबित साहब ने मुझे किताब "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" दी जिसने मेरे अंदर एक अजीब इन्क़िलाब पैदा कर दिया और मैंने इमाम महदी अलैहिस्सलाम के बारे में तफ़सीली तहक़ीक़ का फ़ैसला कर लिया। मैं अपनी ज़ाती तहक़ीक़ से इस नतीजा पर पहुंचा हुआ था कि नासिख़-ओ-मंसूख़ का अक़ीदा ग़लत और क़ुरआन की हुर्मत के ख़िलाफ़ है। तथा आज़ादी मज़हब का मैं क़ायल था। अहमदियत के बारे में तहक़ीक़ करने लगा तो देखा कि अहमदियत तो उन्ही बातों का परचार करती है। फिर कुछ क़ुरआन की आयातों के बारे में प्रश्न करने पर मुस्तफ़ा साबित साहब ने मुझे five volume commentary दी और कहा कि इस में सब प्रश्नों का उत्तर मौजूद है। मैंने देखा इस में मेरे समस्त प्रश्नों के उत्तर मेरे ही सोच और मेरी आशा के अनुसार मौजूद थे। फतही साहब कहते हैं कि मैंने बहुत सोचा कि वह्यी इलाही का झूठा दावा करना तो बड़ा पाप है लेकिन जो उमूर इमाम महदी अलैहिस्सलाम लेकर आए हैं सब हक़-ओ-हिदायत और रुहानी उलूम पर मुश्तमिल हैं। इक्का दुका मफ़हूम तो कोई न कोई वर्णन कर देता है लेकिन इस क़दर सच्चे अर्थ और इतनी बड़ी संख्या में इस पूरी सदी में किसी भी व्यक्ति को अल्लाह तआला ने अता नहीं फ़रमाए तो क्या अल्लाह तआला ने इस अज़ीम इनाम से ऐसे व्यक्ति को नवाज़ा है जो ज़ुल्म अज़ीम करते हुए वह्यी इलाही का दावा करता है। आख़िर दुआओं से, पढ़के, कर 2001 ई. में मुस्तफ़ा साबित साहब जब मिस्र तशरीफ़ लाए तो कहते हैं कि मैंने उन्हें बताया कि मैं इमाम महदी अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आया हूँ। उन्हें शिद्दत-ए-जज़्बात की वजह से एक लम्हा के लिए मेरी बात का यक़ीन नहीं आया। इसके बाद मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अरबी पुस्तकें का अध्यन शुरू किया और अर्थ और मफ़ाहीम का एक समुद्र मेरे सामने ठाठें मारने लगा।

फतही साहब की जमाअत के लिए जो इलमी ख़िदमात हैं उनमें 2005 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की किताब जीवनी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (life of muhammad) का अंग्रेज़ी से अरबी में अनुवाद किया। अल् हिवारुल मुबश्रा र के प्रोग्रामों में शामिल होते रहे और बड़े पुरजोश अंदाज़ में ठोस और तर्क पूर्ण उत्तर देते थे जिन्हें लोग बहुत पसंद करते थे। एक मिस्री ईसाई पादरी ने क़ुरआन-ए-करीम के पर एतराज़ात पर आधारित एक सीरीज़ चलाई जिसका शीर्षक था। हल क़ुरआन कलामुल्लाह? अर्थात क्या क़ुरआन ख़ुदा का कलाम है? इस के उत्तर में फतही साहब ने 2006 ई. में प्रोग्रामों की एक सीरीज़ रिकार्ड करवाई जिसका नाम था। "नाअम इन्नाहु कलामुल्लाह"। अर्थात हाँ निसंदेह यह ख़ुदा तआला का कलाम है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अरबी क़सायद की तशरीह पर मुश्तमिल प्रोग्राम रूहुल-क़ुदुस मआ किया जिस में क़सायद के शब्दी-ओ-माअनवी एजाज़ को बहुत ख़ूबसूरत अंदाज़ से वाज़िह किया। इस के इलावा असंख्य प्रोग्रामों में शिरकत करते रहे जिन में نَبُوَّاتُ تَحَقَّقَتْ अर्थात पीशगोईयां जो पूरी हो गईं, बराहीन अहमदिया के इलमी मआरिफ़, فِيْ سَمَوَاتِ الْقُرآنِ, तारीख़े इस्लाम और ख़ातमन नबिय्यीन इत्यादि शामिल हैं।

इस के इलावा आपकी जमाअती ख़िदमात भी हैं। स्थानी जमाअत में एक लंबा अरसा तक सैक्रेटरी तब्लीग़ के तौर पर ख़िदमत बजा लाते रहे। अपने आपको वक़्फ़ के लिए भी पेश किया। कई वर्षों तक बतौर वाक़िफ़ ज़िंदगी जमाअती ख़िदमात बजा लाते रहे। जमाअती सैंटर में दरस भी दिया करते थे।

उनके बेटे इबराहीम फतही साहब कहते हैं कि अब्बा जान मरहूम सूरः फ़ातिहा की रोशनी में सच्ची ज़िंदगी जीने वाले इन्सान थे। उनकी ज़िंदगी ख़िलाफ़त की नेअमत के नूर से फ़ैज़याब थी। ख़लीफ़-ए-वक़्त के लिए इशक़ और ताज़ीम के अजीब जज़बात रखते थे। उनके नज़दीक सब मुश्किलात के हल और सब मुश्किल मसायल को समझने और अल्लाह तआला की तरफ़ जाने वाला रास्ता जानने का केवल एक ही तरीक़ा है और वह है ख़िलाफ़त। लिखते हैं कि पिता साहब कहने और करने में पूर्ण सच्च से काम लेने में प्रसिद्ध थे। हर काम से पहले हमेशा दुआ और ख़ुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाते थे। यदि उनसे कोई कहता कि मुझे नसीहत करें तो उसे कहते कि दुआ करो और अल्लाह तआला से सद मार्ग तलब करो और ख़लीफ़-ए-वक़्त को दुआ के लिए लिखों। आप गहरा इलम और वसीअ मालूमात रखते थे। अध्यन बहुत वसीअ था। हर इलम की किताबें पढ़ते और नए सौच और जदीद तहक़ीक़ात को समझने की कोशिश में लगे रहते। प्राप्त अध्यन और इलम को बारीक दीनी उमूर को समझने और समझाने में व्यस्त रहते। दरस-ओ-तदरीस में उनका अंदाज़ बहुत ख़ूबसूरत था और इस मध्य कभी कभी उपहास भी करते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें को हमेशा पढ़ते रहते और उनसे मआरिफ़ के मोती निकाल कर उन्हें अपनी प्रतिदिन की ज़िंदगी में मशअल-ए-राह बनाते। जुमा के दिन अपने लैक्चर में और एम.टी.ए के प्रोग्रामों में ये मआरिफ़ वर्णन करते थे। ख़िदमत दीन का जज़बा बहुत था। फिर कहते हैं कि हस्पताल में जब बीमार थे, दाख़िल थे तो सांस में दुशवारी के अतिरिक्त नर्सों को अहमदियत की तब्लीग़ करते रहे। जिन आला अख़लाक़ की लोगों को नसीहत करते घर में उन पर अमल कर के दिखाते। आसानी और तंगी में सच्चाई और तक़्वा से चिमटे

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

रहे। अल्लाह तआला से मुलाक़ात की उन्हें बहुत तड़प थी। अक्सर कहते कि इस दुनिया की कोई हैसियत नहीं है। इस दुनिया में आख़िरत के लिए अमल करना ही हक़ीक़ी मुक्ति है। अक्सर ख़ुदा तआला से मिलने के लिए शौक़ की बातें करते थे। उनके बेटे कहते हैं कि आख़िरी दिनों में जब मुझे परेशान देखते तो कहते कि मेरे पास बैठ कर सूर: फ़ातिहा और दुरूद शरीफ़ बार-बार पढ़ो क्योंकि बीमारी से शिफ़ा ख़ुदा तआला के इच्छा से होती है और उसी को दवा का भी इलम है। तिब्ब उस के इज़न के बग़ैर कुछ भी नहीं कर सकता। मुझे दुनिया की कोई पर्वा नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला से मिलने का शौक़ है। यही बेटे लिखते हैं कि मेरी माता वर्णन करती हैं कि मेरे मियां हमेशा जमाअत की ख़िदमत को हर दूसरे काम पर प्राथमिकता देते थे। ज़्यादा वक़्त घर से बाहर तब्लीग़ में गुज़ारते थे, उसी की बरकत से अल्लाह तआला भी हमारे बच्चों की आश्चर्य चकित तौर पर हिफ़ाज़त फ़रमाता था।

डाक्टर हातिम हिलमी अल् शाफ़ी साहब लिखते हैं कि हमारे भाई और उस्ताज़ आदरणीय फतही अब्दुल सलाम साहब वास्तव में ऐसे लोगों में से थे जिनके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मोमिनों में से कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हों ने ख़ुदा से किया हुआ अह्द पूरा कर दिया। डाक्टर हातिम साहब कहते हैं कि बैअत से वफ़ात तक के अरसा में मैं ने आपको एक अजीब इन्सान पाया। आपको ख़ुदा तआला और उस की सिफ़ात और तौहीद की मुहब्बत का नशा था। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन-ए-करीम के आशिक़ थे। सूर: फ़ातिहा के इशक़ में फ़ना थे। अपने क़ीमती दरसों में आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़सीर सूर: फ़ातिहा के आसमानों में परवाज़ करते नज़र आते थे।

हुसैन अल् मिसरी साहब अरदन से हैं। लिखते हैं फतही साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और क़ादियान के आशिक़ थे। ख़िलाफ़त पर आपको पुख़्ता ईमान था। बहुत इलमी आदमी थे। फिर अपना वाक़िया वर्णन करते हैं कि क़ादियान जलसा 2018 ई. में उन्होंने इकट्ठे शिरकत की। कहते हैं जब मैं क़ादियान पहुंचा तो मुझे सराय वसीम में ठहराया गया। वहां फतही साहब मुझे बड़ी मुहब्बत से मिले। जलसा की कार्रवाई के बाद रात को मेरे साथ "बराहीन अहमदिया'' की बातें शुरू कर देते। आपको क़ादियान से इशक़ था। क़ादियान के बारे में कहते कि यह हमारे प्यारे की बस्ती है। हमने मिलकर क़ादियान के मुक़द्दस स्थान देखे और कहते हैं कि मैं हैरान रह गया कि फतही साहब को हर जगह और उस के इतिहास का तफ़सीली इलम था। जिस दिन उन्होंने क़ादियान से विदा होना था हम नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद बेतुल ज़िकर और बतुद दुआ में गए। वहां आपकी विनम्रता देख कर मैं भी रुक नहीं सका। वहां से फ़ारिग़ हो कर जब बाहर निकले और बहिश्ती मक़बरा वाले चौक के क़रीब पहुंचे तो हैरान-ओ-परेशान इधर उधर देखने लगे और फिर थोड़ी देर के बाद मेरे पूछने पर रोते जाते थे और सिसकियाँ लेते जाते थे और फिर ज़मीन पर सज्दे में गिर गए। फिर उठे और आसमान की तरफ़ हाथ उठा कर काँपती आवाज़ से कहा कि हे ख़ुदा तुझे पता है कि अपने प्यारे की हम-साएगी में रहना मुझे कितना अज़ीज़ है। हे ख़ुदा! तुझे इल्म है कि मैं आज की रात यहीं गुज़ारना चाहता हूँ लेकिन थोड़ी देर बाद हमारे रुख़स्त होने का वक़्त हो जाना है। क्योंकि उस दिन जिस दिन यह वाक़िया हुआ उनको सूचना दी गई थी कि आज उनकी वापसी है। तू हर चीज़ पर क़ादिर है। हर काम तेरे हाथ में है। तेरे इज़न से ही सब कुछ होता है और क़ानून क़ायम हैं और बदलते हैं। मेरा सफ़र मुल्तवी कर दे ताकि कुछ घंटे और मेरी आँखों को ठंडक नसीब हो। और बहरहाल फिर हुआ यह कि गाड़ी आई और क्योंकि उनको कहा गया था कि इस दिन उनकी सीटें हैं तो फतही साहब का सामान इस में रख दिया गया। थोड़ी देर बाद सराय वसीम में फतही साहब की आवाज़ गूँजी कि अल्लाहु-अकबर अल्लाहु-अकबर यह कहते हैं कि उन्होंने कहा कि मेरे रहीम रब ने मेरी दुआ सुन ली और मेरा सफ़र मुल्तवी कर दिया। वह ख़ुदा तआला की हमद-ओ-शुक्र में व्यस्त थे। कहते हैं मैं नीचे उतरा तो फतही साहब ने बड़े ज़ोर से मुझे गले से लगा कर फ़रमाया कि आपने देखा कैसे अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत से हमारी दुआएं क़बूल फरमाई और किस तरह वह क़बूल फ़रमाता है। फिर उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्हें देखकर में भी अशकबार हो गया। बताने लगे कि मुंतज़मीन को ग़लती लगी थी कि मेरी फ़्लाईट आज है। वह आज नहीं थी बल्कि अगले दिन थी या किसी और दिन थी। यह कहते हैं उनको अपनी वफ़ात का भी पता चल गया था जिसका इज़हार उन्होंने हुसैन साहब से किया और एम.टी.ए के लिए जो प्रोग्राम वह बना रहे थे उस के लिए हिदायात भी दीं कि किस तरह अब बनाना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक इलहाम हुआ था कि ''يَدْعُوْنَ لَكَ اَبْدَالُ الشَّامِ وَعِبَادُ اللهِ مِنَ الْعَرَبِ अर्थात तेरे लिए अबदाल शाम के दुआ करते हैं और बंदे ख़ुदा के अरब में से दुआ हैं।'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि "ख़ुदा जाने यह क्या मुआमला है और कब और क्योंकर इस का ज़हूर हो।وَاللهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ'' (तज़किरा, ऐडीशन 4, पृष्ठ 100)

लेकिन बहरहाल हम ने देखा कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जहां-जहां भी अरब जमाअतें क़ायम हो रही हैं उनमें भी और इस मिसाल से जो अभी मैंने फतुही साहब की दी है यह सामने आता है कि किस तरह अल्लाह तआला अरबों में से मख़लसीन पैदा कर रहा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर दुरूद-ओ-सलाम भी भेजते हैं और मुहब्बत और प्यार और इशक़ का इज़हार भी करते हैं। इस बात की गवाही देते हुए हातिम साहब भी लिखते हैं कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की पुस्तकें और कविताओं से फतही साहब की मुहब्बत वर्णन करने योग्य है।

ख़िलाफ़त से मरहूम की मुहब्बत और इताअत और सम्मान उनके हर कथनी और करनी से झलकता था और हर एक को नज़र आता था। मज़बूत इमान वाले था कि ख़िलाफ़त ख़ुदा तआला की अज़ीम नेअमत है और इस के मिलने पर हमद-ओ-शुक्र के गीत गाते थे। वे इस अल्लाह की रस्सी को बड़ी मज़बूती से थामे हुए थे और इताअत ख़िलाफ़त में फ़ना थे। यह तो मैंने भी देखा है। ऐसा प्यार और मुहब्बत मुलाक़ात के वक़्त उनकी आँखों में और हर हरकत से नज़र आता था और झलकता था जो ग़ैरमामूली मयार का था और साथ अदब और एहतिराम भी बेशुमार था। बड़े इलमी मज़ामीन ले के आते थे। यदि उनकी किसी बात या दलील की मुझे समझ नहीं आई या यदि आई और मैंने रद्द कर दिया या मज़ीद तहक़ीक़ के लिए कहा तो पूर्ण तसल्ली से उसे स्वीकार किया। मानो कि ख़िलाफ़त के फ़िदाई और सुलतान-ए-नसीर थे।

उसामा अब्दुल अज़ीम साहब लिखते हैं कि फतही अब्दुल सलाम साहब बहुत बड़े आलिम थे। आयु में भी बड़े होने के अतिरिक्त बहुत विनम्र इन्सान थे। हम में से सबसे छोटे के साथ भी बड़े अदब से पेश आते और उस का मश्वरा क़बूल करते थे। बहुत वसीअ हौसले के मालिक थे। यदि किसी से कोई ज़्यादती हो जाती तो सब के सामने बड़े इन्किसार के साथ इस से माज़रत करते और इस का सिर चूमते। मरहूम को इस्लाम से बहुत मुहब्बत थी और अहमदी नौजवानों को जमाअत के ऐसे ख़ादिम और सिपाही बनाना चाहते थे जिनमें इलम भी हो और रूहानियत भी। रात देर तक हमें नसीहत करते और जमाअती ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाते। कहते हैं कि बहुत विनम्र थे। यदि कोई आपसे अक्खड़पन से बात करता तो भी इस का उत्तर सख़्ती से नहीं देते थे। मेरे इलम में भी है। कुछ लोगों ने उनको सख़्त तकलीफ़ भी पहुंचाई। उनसे सख़्त रवैय्या इख़्तियार किया लेकिन यदि वक़्ती तौर पर किसी वजह से उनके मुँह से, फतही साहब के मुँह से कोई सख़्त शब्द निकल भी गया तो फिर माफ़ी भी मांगी और कई दफ़ा मुझे भी लिख देते थे कि मैंने उस व्यक्ति से अमुक बात की है और इस से माफ़ी भी मांग ली है। तो यह हौसला कम लोगों में ही होता है।

तमीम साहब लिखते हैं कि अक्सर कहा करते थे कि इस्लाम में कोई काम ख़िलाफ़त के बग़ैर दरुस्त नहीं हो सकता। जिस चीज़ की हमें ज़रूरत है वह मुख़्तलिफ़ ख़्यालात की तरफ़ मायल करना नहीं बल्कि हमें ख़लीफ़ा की ज़रूरत है जो मतभेदों का फ़ैसला करता है और ख़ुदाई राहनुमाई के नतीजा में हमारी राहनुमाई करता है। मरहूम हमेशा हर उस बात को छोड़ने के लिए तैयार थे जिसे ख़लीफ़-ए-वक़्त क़बूल नहीं करते थे। कहते हैं हुज़ूर जब भी आपसे मिलकर आते एक अजीब ख़ुशी से परिपूर्ण नज़र आते और बड़े वज्द और मुहब्बत से मुलाक़ात और इस में होने वाली बातों का वर्णन करते। फ़लस्तीन से एक महिला समाह साहिबा हैं। कहती हैं मैंने स्वप्न में देखा जो हक़ीक़त लगता था कि मैं और मेरी बहन सहन में बैठी हैं और उसने मुझे कहा कि उसे किसी ने बताया है कि एक फ़रिश्ता एक मज्लिस में बैठे हुए अहमदियों को घेरे हुए था। जब फतही साहब आए तो फ़रिश्ता ने फतही साहब से कहा कि तुम चम्बेली का सबसे ख़ूबसूरत फूल हो। इस पर मैं अपनी बहन को कहती हूँ कि फतही साहब कितने पाक साफ़ हैं।

ताहिर नदीम साहब अरबी डैसक के हैं, लिखते हैं कि उनमें एक ख़ूबी यह थी कि अतिरिक्त एक बड़े आलिम होने के वह व्यक्ति विनम्रता का पुतला था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कलाम से ऐसा अत्यधिक लगाओ और इशक़ था कि बराहीन

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

अहमदिया को उन्होंने न जाने कितनी मर्तबा पढ़ा और उसके नए-नए अर्थ निकाल कर पेश करते रहते थे। इस पर उन्होंने कई प्रोग्रामज़ भी रिकार्ड करवाए।

जलसा की भी रौनक थे। हम सारे जानते हैं। बड़ी पुरज़ोर आवाज़ थी और आख़िरी दिन बड़े पुरजोश नारे भी लगाया करते थे। उनके नारों में भी एक जोश होता था और लगता था दिल से आवाज़ फूट रही है। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनके नक़्श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनकी दुआएं जो हैं बच्चों के लिए वे भी क़बूल फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला वर्णन है आदरणीया रज़ीया बेग़म साहिबा जो ख़लील अहमद साहब मुबश्शिर साबिक़ मुबल्लिग़ इंचार्ज कैनेडा और साबिक़ अमीर और मिशनरी इंचार्ज सीरालियोन की पत्नी थीं। यह भी पिछले दिनों वफ़ात पा गई हैं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ख़लील साहब लिखते हैं कि मेरी पत्नी रज़ीया बेग़म मैदान-ए-तब्लीग़ के लम्बे अरसा के समय अपने वाक़िफ़ ज़िंदगी पति के साथ कदम से कदम मिला कर सब्र जोश और वलवले के साथ ख़िदमत सिलसिला की तौफ़ीक़ पाती रहीं। अफ़्रीक़ा में ख़ुसूसीयत से आपको भरपूर अंदाज़ में मेहमान-नवाज़ी और ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिलती रही। कभी व्यर्थ का मुतालिबा नहीं किया और हर हाल में सब्र-ओ-शुक्र के साथ वक़्फ़ ज़िंदगी पति के साथ मिलकर ख़िदमत दीन की तौफ़ीक़ पाई। मरहूमा इबादात में नियमित थीं। सद्के और माली क़ुर्बानी में दिल्ली प्रेम और जोश के साथ हिस्सा लेतीं। वफ़ात से पूर्व समस्त चंदों की अदायगी को मुकम्मल की। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में एक बेटा और तीन बेटियां बाक़ी आगे उनकी नसलें हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला वर्णन मुहतरमा सायरा सुलतान साहिबा पत्नी डाक्टर सुलतान मुबश्शिर साहब का है। उनकी भी पिछले दिनों हार्ट-अटैक की वजह से वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनको अल्लाह के फ़ज़ल से लजना पाकिस्तान में मुख़्तलिफ़ विभागों में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और ख़िदमत-ए-ख़लक़ के विभाग में विशेषता उन को ख़िदमत की ज़्यादा तौफ़ीक़ मिली। उनके मियां डाक्टर सुलतान मुबश्शिर साहब लिखते हैं कि जमाअत और ख़िलाफ़त की वफ़ादार थीं। इस बात पर बहुत ख़ुश थीं कि हमारा घर मस्जिद मुबारक के क़रीब है। जब उनकी शादी हुई तो उस वक़्त उनकी सास साहिबा तो वफ़ात पा चुकी थीं उनके सुसर मौलाना दोस्त मुहम्मद शाहिद साहब जीवित थे। उनकी हमेशा बेटीयों की तरह ख़िदमत की और उनकी समस्त ज़रूरीयात का ख़्याल रखा। उनके पास मुख़्तलिफ़ देशों से आने वाले मेहमान जो दिन के किसी भी हिस्सा में आते थे उनकी मेहमान-नवाज़ी भरपूर तरीक़ पर करती थीं। एक वाक़िफ़ ज़िंदगी की बहू होने का उन्होंने हक़ अदा कर दिया। निहायत दर्जा गरीबों का ख्याल रखने वालीं थीं और इस मुआमला में उनका हाथ बहुत खुला था यहाँ तक कि कभी कभी मक़रूज़ भी हो जाया करती थीं। बाज़-औक़ात अपना ज़ेवर भी बेचा लेकिन ग़रीबों की हर लिहाज़ से सहायता की। चंदों में नियमित थीं। मूसिया थीं। ज़ेवर बीच के भी उन्होंने अपने कुछ चंदे अदा किए। कुछ तहरीकात में ज़ेवर दिया। न केवल अपना बल्कि अपने मरहूम माता पिता की तरफ़ से भी कुछा ज़रूर देती थीं। बहुत सफ़ाई पसंद थीं। दुआ-गो थीं। नमाज़ रोज़े की पाबंद थीं। तहज्जुद गुज़ार थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनके बच्चे जो दो बेटे हैं उनको भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इन बच्चों को भी और डाक्टर साहब को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीया ग़सून अल् मुज्ज़ेमानी साहिबा का है। यह सीरिया की हैं जो आजकल तुर्की में थीं। उनकी भी पिछले दिनों में उनतालिस वर्ष की आयु में वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। लंबे अरसा से बीमार थीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मरहूमा मूसिया भी थीं। तुर्की के सदर जमाअत और मुरब्बी सिलसिला सादिक़ बट साहब लिखते कि 2015 ई. में सीरिया से हिज्रत कर के तुर्की आई थीं। 2016 ई. में उनका तक़र्रुर बतौर सदर लजना इस्कंद्रून हुआ और अंतिम समय तक सदर लजना ख़िदमत बजा लाती रहीं। काफ़ी अरसा से बीमार थीं और बिस्तर पर थीं जबकि इस बीमारी की हालत में भी हर समय ख़िदमत दीन में व्यस्त रहतीं। इंटरनैट के माध्यम मुख़्तलिफ़ फ़ोर्मज़ पर तब्लीग़ करती रहती थीं। नीज़ सीरियन अहमदी महिलाओं की शिक्षा-ओ-तर्बीयत में अहम किरदार अदा किया। बड़ी हर दिलअज़ीज़ थीं। सच्ची हमदरद और सबकी ख़ैर-ख़्वाह थीं। कुछ और महिलाओं ने भी मुझे लिखा है और उन्होंने उनकी बड़ी प्रशंसा की है। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। इन सब का जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

करे और घर की समस्त ज़रूरियात पूरी करे और औरत को कहा कि वे घर और बच्चों की हिफ़ाज़त और तर्बीयत करे। जबकि बाहर की दौड़ धूप के लिए मर्द को इस की सलाहीयतों के पेश-ए-नज़र सम्बोधित किया और औरत की फ़ित्रत के अनुसार और इस के सम्मान के पेश-ए-नज़र घर की देख भाल उस के सपुर्द की।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरशाद कि औरत में दीन और अक़्ल की दृष्टि से एक तरह की कमी है। इस में किसी संदेह की गुंजाइश नहीं क्योंकि यह भी औरत की फ़ित्रत के ऐन अनुसार कही गई बात है। दीन की तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद वर्णन फ़र्मा दिया कि उसकी आयु के एक बड़े अरसा में उस पर हर माह कुछ ऐसे दिन आते हैं जिनमें उसे हर किस्म की इबादात से छूट होती है। और देखा जाए तो यह भी एक तरह से उस पर ख़ुदा तआला का एहसान है। जबकि अक़्ल की कमी की बात में भी औरत की तहक़ीर नहीं की गई बल्कि इस से मुराद औरत की सादगी है, जिसका सबूत आज की दुनिया में औरत ने ख़ुद प्रदान कर दिया है कि वह बहुत सादा है। क्योंकि पश्चिम की दुनिया के मर्द ने उसे आज़ादी का झांसा देकर जिस तरह अपने फ़ायदा के लिए इस्तिमाल किया है वह सच्चो में सब से अधिक सच्चे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस क़ौल की सच्चाई का मुँह बोलता सबूत है।

मर्द ने अपनी हवस की ख़ातिर उसे घर की चार-दीवारी से निकाल कर बाहर बाज़ार में ला खड़ा किया है। और इस्लाम ने रोज़ी रोटी की जो ज़िम्मेदारी मर्द पर डाली थी इस में भी मर्द ने औरत की सादगी से फ़ायदा उठाते हुए अपनी यह ज़िम्मेदारी उसे बांट कर उसे अपने फ़ायदा के लिए इस्तिमाल किया है। जहां उसे मर्दों की तरह मेहनत के साथ-साथ मुख़्तलिफ़ प्रकार मर्दों से वास्ता पड़ता है जो अधिकतर अपनी नज़रों की हवस पूरी करने के लिए मुख़्तलिफ़ प्रकारों से उस पर नज़रें डालने का प्रयास करते हैं।

फिर यदि ग़ौर किया जाए तो पश्चिम की दुनिया का औरत और मर्द की बराबरी का ऐलान केवल एक खोखला दावा ही है। इसी पश्चिम दुनिया में कोई एक मुल्क भी ऐसा नहीं जिसकी हुकूमती मशीनरी चलाने वाले पर्लेमेंट के निज़ाम में मर्दों के बराबर महिलाएं मौजूद हों। उन्हें पश्चिम देशों में बीसियों जगहों पर किसी नौकरी के लिए जो पैकेज एक मर्द को दिए जाता है वह उमूमन उसी नौकरी के लिए औरत को नहीं दिया जाता। और ये सारी बातें औरत की सादगी की स्वयं गवाह हैं।

जहां तक क़ुरआन-ए-करीम के मर्द को कव्वाम क़रार देने की बात है तो ख़ुद क़ुरआन-ए-करीम ने इस की वजूहात भी वर्णन फ़रमाई हैं। एक वजह यह वर्णन फ़रमाई कि घरेलू निज़ाम चलाने के लिए एक फ़रीक़ को दूसरे पर किसी क़दर प्राथमिकता दी गई है और दूसरी वजह यह वर्णन फ़रमाई कि वह अपने अम्वाल औरत पर ख़र्च करता है।

एक फ़रीक़ को दूसरे पर प्राथमिकता का कारण फ़ित्रत इन्सानी के ऐन अनुसार है क्योंकि यदि हम दुनिया के निज़ाम पर नज़र डालें तो हर जगह एक फ़रीक़ ऊपर और एक निसबतन नीचे होता है। यदि दुनिया में सब लोग बराबर होते या यूं कहें कि यदि सब लोग बादशाह बन जाते तो दुनिया एक दिन भी न चल सकती इसलिए अल्लाह तआला ने कुछ लोगों को बड़ा और कुछ को छोटा, कुछ को अमीर और कुछ को ग़रीब बनाया। हम देख सकते हैं कि हर मुल्क में निज़ाम हुकूमत को चलाने के लिए एक कैबिनेट होती है यदि उस देश के सारे लोग ही कैबिनेट का हिस्सा बन जाएं तो वह मुल्क चल ही नहीं सकता। बिल्कुल इसी तरह अल्लाह तआला ने घरेलू निज़ाम को चलाने के लिए मर्द को निसबतन ज़्यादा इख़्तयारात दिए लेकिन जिस तरह एक सरबराह हुकूमत और देश की कैबिनेट के ज़ाइद इख़्तयारात के साथ साथ इसी निसबत से ज़ाइद फ़रायज़ भी होते हैं इसी तरह इस्लाम ने मर्द पर महिलाओं की निसबत ज़ाइद ज़िम्मेदारियाँ भी डाली हैं। अत: मर्द-ओ-औरत के हुक़ूक़-ओ-फ़रायज़ के एतबार से इस्लामी निज़ाम फ़ित्रत के ठीक अनुसार है और इस में किसी किस्म की कमी नहीं।

(शेष.....)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-25)

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

मेसीडोनिया के दल के एक मेहमान Dragan Georgiev (दर्गान जारजीव साहिब) ने बताया :

मैं पहली बार जलसा में शामिल हुआ हूँ। यहां सब कुछ बहुत शानदार था। बहुत ज़्यादा संख्या में लोग उपस्थित थे। मेरा मुस्लमानों से पहली मर्तबा इस तरह इतना क़रीबी से परिचय हुआ है। और ऐसी तक़ारीर सुनी हैं जो इस्लामी शिक्षा के बारे में थीं। यहां मुस्लमानों ने हमारा स्वागत ऐसे किया जैसे वह हमेशा से हमें जानते हों। जलसे का मयार बहुत बुलंद था। इतने ज़्यादा लोगों की सब ज़रूरीयात का हर समय ख्याल रखा गया। खाना, पिलाना इत्यादि। यदि मुझे पुन: तौफ़ीक़ मिली तो जलसा पर पुन: ज़रूर आऊँगा।

एक और मेहमान Zaklina Panoska-Anotzelkovi (अलकीना यांवोसका एंजेलोसका) ने बताया

जलसे का आयोजित होना बहुत उच्च स्तर पर था। लोगों की बहुत बड़ी संख्या से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। हिफ़ाज़त का प्रबन्ध बहुत उच्च था। हुज़ूर की तक़ारीर और अन्य तक़ारीर बहुत अच्छी थीं। हुज़ूर से मुलाक़ात पर बहुत संतुष्ट हूँ और शुक्रगुज़ार हूँ कि हुज़ूर ने हमें अवसर दिया और अपनेव समय में से हमें कुछ दिया। बहुत अच्छी मुलाक़ात थी। यह मेरे लिए बहुत महान अनुवभ था। सब लोग जो मुलाक़ात में उपस्थित थे हुज़ूर के उत्तर पर बहुत संतुष्ट थे और हुज़ूर की ओर से इज़्ज़त-अफ़ज़ाई पर बहुत संतुष्ट थे।

मेसीडोनिया से आने वाले एक मेहमान Arben Fejzulai (अर्बन फ़ैज़ूलाई) ने कहा :

मैं जलसा पर पहली बार शामिल हुआ हूँ और मेरे लिए यह सब कुछ नया था। मैं नहीं जानता था कि इस्लाम में ऐसी जमाअत भी उपस्थित है। इस जलसा में शामिल होने के बाद विनीत अपने आपको इलमी तौर पर बहुत बेहतर महसूस कर रहा है। मुझे अहमदियत के बारे में ज़्यादा ज्ञान प्राप्त हुआ है और अनुवभ भी। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं इस जमाअत का ही हिस्सा हूँ। इतनी बड़ी संख्या में लोगों का इकट्ठा होना और सबकी ज़रूरीयात का ख्याल रखना यह बहुत बड़ा काम है।

उन्हों ने कहा जब मैं हुज़ूर की तक़ारीर सुन रहा था तो मुझे महसूस हो रहा था कि ये लोग कैसे एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं। एक दूसरे की इज़्ज़त करते हैं और किसी का नुक़्सान नहीं चाहते। आज हुज़ूर से मुलाक़ात में जो कुछ मैंने हुज़ूर से सुना उसके बारे में ग़ौर करूँगा कि हमारे और अहमदियों के मध्य क्या अंतर है। जो कुछ मैंने हुज़ूर से सुना, मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरा संदेश जमाअत को यह है कि मेरे देश और अन्य देशों, जहां अभी जमाअत क़ायम नहीं है वहां अहमदियत के मिशनरी भिजवाए जाएं जो वहां के लोगों को बताएं कि अहमदियत क्या है।

मेसीडोनिया से आने वाले एक और मेहमान Mone Jovanov (मोने जोवानो साहिब) ने कहा :

मैं जलसे में शामिल हो कर उसकी यादों के साथ वापस जा रहा हूँ। जलसा के इंतिज़ामात का काम ऐसा है कि कोई भी इदारा बहुत मुश्किल से सरअंजाम दे सकता है। बल्कि मैं कहूँगा कि एक बड़ा मुल्क भी इस मयार का प्रोग्राम आयोजित नहीं कर सकता। यह एक शानदार अनुवभ था। जलसे का माहौल उस की प्लैनिंग, उस का आयोजित होना सब कुछ ज़बरदस्त और सुन्दर था। तक़ारीर ज्ञान से परिपूर्ण थी। जलसे का संदेश विश्वव्यापी संदेश था कि समस्त संसार के लिए भलाई।

हुज़ूर से मुलाक़ात बहुत दिलचस्प थी। सबकी बातें संतुष्टि और सब्र से सुनी और उनके उत्तर दिए। जितने भी प्रश्न हुए हुज़ूर अनवर ने उनके उत्तर दिए। हुज़ूर से जो मुलाक़ात हुई वह बहुत उच्च स्तर की थी।

मेसीडोनियन दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात 11 बज कर 40 मिनट तक जारी रही। अंत में दल के समस्त सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से शरफ़-ए-मुलाक़ात प्राप्त किया और प्रत्येक ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मुलाक़ात के अंत पर दल के समस्त सदस्यों को क़लम भी प्रदान फ़रमाए और बच्चों और बच्चियों को प्रेम से चॉकलेट प्रदान फ़रमाए :

बोज़नीन दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार मुल्क बोज़नीन (Bosnia) से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। बोज़नीन से इस वर्ष 47 लोग पर आधारित दल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ। उनमेंसे एक बड़ी संख्या ज़ेर तब्लीग़ लोग की थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों से दरयाफ़त फ़रमाया कि जलसा कैसा गुज़रा। इस पर दल के सदस्यों ने बरमला इस बात का प्रकटन किया कि जलसा बहुत अच्छा गुज़रा और सारे इंतिज़ामात बहुत अच्छे थे। प्रत्येक चीज़ व्यवस्थित थी।

एक महिला ने कहा कि मेरे लिए यह बात गौरव की है कि मुझे जलसा में शामिल होने का अवसर मिला और मैंने हुज़ूर अनवर के समस्त ख़ुतबात सुने हैं। मेरे पास शब्दों नहीं हैं कि मैं अपनी भावनाओं का प्रकटन कर सकूं।

उन्हों ने अपनी बहन के लिए दुआ की दरख़ास्त की कि वह बीमार है और घर में परेशानियाँ हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "अल्लाह तआलाफ़ज़ल फ़रमाए।"

एक मेहमान महिला ने अर्ज़ किया कि मैं इस समय हुज़ूर के सामने हूँ। एक महान व्यक्तित्व के सामने हूँ। मैं हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करती हूँ कि सब का बहुत अच्छा ख्याल रखा गया। हुज़ूर अनवर की तक़ारीर बहुत अच्छी थीं और हम सब पर इस का बहुत प्रभाव हुआ है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए :

एक महिला Zeinaba साहिबा ने कहा कि जलसे में शमूलियत के कारण से हमें अपने धर्म के बारे में हक़ीक़ी शिक्षा का ज्ञान हुआ है और बहुत कुछ मालूमात में बढ़ोतरी हुई है। हुज़ूर अनवर के प्रभावी व्यक्तित्व ने हमें बहुत प्रभावित किया है

एक मित्र सग़ीर साहिब ने अर्ज़ किया कि यह मेरा दूसरा जलसा है जिस में मैं शामिल हुआ हूँ। यह जलसा मेरे लिए एक विशेष एहमीयत का हामिल है क्योंकि इस जलसे में बैअत करके मुझे अहमदियत में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली है। मेरा कोई प्रश्न नहीं है मैं केवल हुज़ूर अनवर के लिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला हुज़ूर अनवर को सेहत दे और लम्बा जीवन प्रदान फ़रमाए :

एक महिला Aldina साहिबा ने अर्ज़ किया कि यहां आने से पूर्व इस्लाम के बारे में इलम न होने के बराबर था। जलसे में शामिल हो कर ख़लीफतुल मसीह के भाषण सुनकर सही इस्लामी शिक्षा का ज्ञान हुआ और बहुत सारी ऐसी बातें मालूम हुईं जो कि पहले मेरे ज्ञान में नहीं थीं। जलसे के सारे इंतिज़ामात बहुत उत्कृष्ट और उचित थे।

एक महिला Emina (अमीना साहिबा) ने कहा कि मैं अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदी हूँ और मेरा बेटा ग़ालिबन BALKAN मैं सबसे पहला वक़्फ़ नौ है। उन्हों ने कहा कि मेरे जीवन की सबसे बड़ी इच्छा यह है कि मेरा बेटा नेक और ख़ादिम दीन हो। मेरी माता जंग से प्रभावित हो कर ज़हनी मरीज़ बन चुकी हैं और मेरे पिता के दिल में इस्लाम के लिए कोई जगह नहीं है।

उन्हों ने कहा कि मैं अपने ख़ानदान में पहली अहमदी महिला हूँ जिसको पर्दा करने के कारण से अपने ही ख़ानदान के लोगों से पर्याप्त मुश्किलात का सामना करना पड़ा। परन्तु मैं इन मुश्किलात से डरती नहीं हूँ और अब मेरे लिए ये बातें कोई अर्थ नहीं रखतीं। उन्हों ने माता पिता की हिदायत के लिए दुआ का निवेदन किया कि अल्लाह तआला मेरे पिता के दिल को नरम करे ताकि वह अहमदियत स्वीकार कर लें।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए और समस्त

मुश्किलात दूर फ़रमाए : एक मेहमान जो रोमन कम्यूनिटी के सदर हैं ने कहा कि मैं एक ऐसे शहर से सम्बन्ध रखता हूँ जहां सबसे ज़्यादा जंग का प्रभाव हुआ है। जंग के मध्य जिस तरह सर्बों पर हमला हुआ, हम रोमन लोगों ने मिलकर उनका मुक़ाबला किया। मैं स्वयं अपने दो बेटों के साथ जंग में शामिल हुआ। एक बेटा शहीद हो गया। मैं इस मुश्किल दौर को कभी भूल नहीं सकता। मैं अब रोमन लोगों की प्रगति के लिए प्रयास कर रहा हूँ। एक प्रोग्राम में जमाअत अहमदिया के साथ सम्बन्ध क़ायम हुआ। आज यहां हुज़ूर को देखकर बहुत ख़ुश हूँ।

हुज़ूर अनवर ने उन्हें सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला आपके प्रयसों में बरकत डाले। आप अपने बच्चों और नौजवानों को शिक्षा दिलवाएं। शिक्षा के बिना प्रगति नहीं हो सकती। बहर हाल प्रगति करने के लिए पढ़ना पड़ेगा। इस ओर ध्यान रहें।

एक बुज़ुर्ग ग़ैर अहमदी दोस्त Bayro Beganovich ने अर्ज़ किया कि मेरी आयु 77 वर्ष है। मेरे जीवन की सबसे बड़ी इच्छा हुज़ूर अनवर को देखने की थी जो आज पूरी हो गई है। ख़ुदा की क़सम अब मुझ पर मौत वारिद हो जाएगी तो मुझे अपने जीवन से कोई शिकवा न होगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुदा तआला आपकी सेहत, आयु और प्रयासों में बरकत दे । 77 वर्ष उम्र ऐसी नहीं है। ख़ुदा आपको मज़ीद आयु दे और सेहत वाली दे। एक मित्र ने अर्ज़ किया कि मैं जलसा पर आकर बहुत ख़ुश हूँ और मेरा दिल बहुत संतुष्ट है। हमें यहां हृदय की शांति नसीब हुई है। एक मेहमान मित्र ने अर्ज़ किया कि मेरे पास बस एक ही बात है कि मैं यहां जलसा में आकर दिल की गहराईयों से संतुष्ट हूँ। एक अहमदी महिला SANELA साहिबा ने कहा कि हुज़ूर अनवर ने अपने भाषण में जिन मामलों की ओर ध्यान दिलाया है, हुज़ूर से दुआ की दरख़ास्त है कि अल्लाह तआला हमें इन नसीहतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। मुबल्लिग़ सिलसिला ने इस महिला के हवाला से बताया कि यह तब्लीग़ में बहुत काम करने वाले हैं और बहुत निडर हो कर तब्लीग़ करती हैं। यहां तक कि वहाबियों से भी बहुत दिलेरी से बात करती हैं। जब वहाबी लोग हमारे बुक स्टॉल पर आकर उलटी सीधी बातें करते हैं तो यह उनको निडर हो कर उत्तर देती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपनी हिफ़ाज़त का ख्याल रखा करें।

एक मित्र ने अर्ज़ किया कि मैं हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करता हूँ। जलसे का सारा प्रबन्ध बहुत उत्कृष्ट रंग में आर्गेनाईज़ हुआ। ऐसा मुनज़्ज़म प्रोग्राम मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा। हम हुज़ूर के लिए दुआ करते हैं कि ख़ुदा तआला हुज़ूर को सेहत-ओ-सलामती वाला जीवन प्रदान फ़रमाए और हुज़ूर नेअमतों को और भी ज़्यादा बाँटते रहें।

एक महिला ने कहा कि मैं बहुत ख़ुश हूँ। मैं पिछले तीन वर्षो से जलसे पर आ रही हूँ। अब वापस बोज़नीन जाने को दिल नहीं चाहता। जलसा बहुत अच्छा था। हुज़ूर अनवर के भाषण ने दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। अल्लाह तआला हमें अनुकरण की तौफ़ीक़ दे।

एक मेहमान मुहम्मद अली साहिब ने कहा कि मैं एक वृद्ध व्यक्ति हूँ और यहां के माहौल में जो दिन गुज़ारे वह शब्दों में वर्णन नहीं किए जा सकते। हुज़ूर से मुलाक़ात मेरे जीवन की एक विशेष घटना है जो जीवन के सुन्दर वाक़ियात में से है। इस जमाअत की शिक्षा ही हक़ीक़ी इस्लाम है और प्रत्येक इस पर कार्यरत है।

एक मेहमान महिला ने कहा कि मैं बोज़नीन से आई हूँ। यहां आकर मेंने बहुत कुछ सीखा है। हुज़ूर अनवर को देखकर और मिलकर बहुत हिम्मत हुई है। इस समय इस्लाम की जो हालत है उसे देख कर बहुत निराशा थी। परन्तु हुज़ूर अनवर के भाषण सुन कर और हुज़ूर अनवर को देख कर बहुत तसल्ली हुई है कि कोई तो है जो इस्लाम की प्रगति के लिए और इस्लाम के दिफ़ा के लिए दिन रात कार्यरत है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुदा तआला आपको हिम्मत दे, सेहत दे और आप उन लोगों में शामिल हो जाएं जो इस दौर में इस्लाम की सेवा करने वाले हैं।

एक महिला ने अर्ज़ किया कि मैं पाँच वर्ष से अहमदी हूँ। यह मेरा पहला जलसा सालाना है और मेरी आशाओं से बहुत बढ़कर है। इतने बड़े EVENT से बहुत कुछ सीखा है। अपनी कमियां देखें, ख़ामियाँ देखें, इन्सान जलसों से बहुत कुछ सीख सकता है। दुआ करें कि मेरी फ़ैमिली अहमदी हो जाएगी। मैं अपने ख़ानदान में अकेली अहमदी हूँ। मेरे माता पिता ने मुझे घर से निकाल दिया था। मेरी शादी एक पाकिस्तानी अहमदी से हुई है। मैं अनुवाद के काम में सहायता करती हूँ। बूज़नीन जमाअत के लिए दुआ की दरख़ास्त करती हूँ।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

जाता है। इस लिए औलिया अल्लाह के इन्कार से हमेशा बचना चाहिए। यहूदियों पर जो आफ़त आई और वे मग़ज़ूब हुए। इस का बड़ा भारी कारण यही थी कि वह ख़ुदा तआला के मामूरों और मुर्सलीन से इन्कार करते रहे और हमेशा उनका विरोध और कष्ट पहुंचाने में हिस्सा लेते रहे। जिसका परिणाम यह हुआ कि अल्लाह तआला का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमन्नबिय्यीन होने का और पहलो

फिर मैं अपने पहले कलाम की तरफ़ लौटते हुए कहता हूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमन्नबिय्यीन होने का यह भी एक पहलू है कि अल्लाह तआला ने केवल अपने फ़ज़ल से इस उम्मत में बड़ी बड़ी योगयताएं रख दी हैं। यहां तक कि عُلَمَآءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَآءِ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ भी हदीस में आया है; यद्यपि मुहद्दिसीन को इस पर जिरह हो परन्तु हमारा नूर क़लब इस हदीस को सही क़रार देता है और हम बिना किसी आपत्ति के इस को स्वीकार करते हैं और कशफ़ माध्यम से भी किसी ने इस हदीस का इन्कार नहीं किया, बल्कि यदि की है तो सत्यापन ही किया है। इस हदीस के यह अर्थ हैं कि मेरी उम्मत के उल्मा बनी इस्राईल के नबियों जैसे हैं। परन्तु उल्मा के शब्द से धोखा नहीं खाना चाहिए। ये लोग शब्दों पर अड़े हुए हैं और उनके अर्थों की तह तक नहीं पहुंचते। यही कारण है कि ये लोग क़ुरआन शरीफ़ की व्याख्या में आगे नहीं चलते।

रब्बानी आलिमों की परिभाषा

रब्बानी आलिमों से यह अभिप्राय नहीं होता कि वह सर्फ़ तथा नहो या मंतिक़ में अनुपमीय हो बल्कि रब्बानी आलिम से अभिप्राय वह व्यक्ति होता है जो हमेशा अल्लाह तआला से डरता रहे और उस की ज़बान बेहूदा न चले,परन्तु आज ये ज़माना ऐसा आ गया है कि मुर्दा शोतक भी अपने आपको उल्मा कहलाते हैं और इस शब्द को ज़ात में दाख़िल कर लिया है। इस तरह पर इस शब्द का बड़ा तिरस्कार हुआ है और ख़ुदा तआला की इच्छा और मक़सद के ख़िलाफ़ उसका अभिप्राय लिया गया है वर्ना क़ुरआन शरीफ़ में तो उल्मा का यह गुण वर्णन की गई है। اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰٓؤُا (फ़ातिर :29) अर्थात अल्लाह तआला से डरने वाले। अल्लाह तआला के वे बंदे हैं जो उल्मा हैं। अब यह देखना ज़रूरी होगा कि जिन लोगों में यह गुण ख़ौफ़ तथा भया और अल्लाह का तक्वा का न पाए जाएं वे हरगिज़ हरगिज़ इस ख़िताब से पुकारे जाने के योग्य नहीं हैं।

वास्तव में उल्मा, आलिम का बहुवचन है और इलम उस चीज़ को कहते हैं जो यक़ीनी और विश्वसनीय हो और सच्चा इलम क़ुरआन करीम से मिलता है। यह न यूनानियों के दर्शन से मिलता है, न वर्तमान युग के इंगलिस्तान के दर्शन से,बल्कि यह सच्चा ईमानी फ़लसफ़ा से प्राप्त होता है। और मोमिन का मेराज और कमाल यही है कि वह उल्मा के दर्जा पर पहुंचे और वह हक़्क़ुल यक़ीन का स्थान प्राप्त हो जो इल्म का चरम स्तर है,परन्तु जो व्यक्ति सच्चे ज्ञानों से लाभान्वित नहीं हैं और मार्फ़त और अनुभूति की राहें उन पर खुली हुई नहीं हैं वह ख़ुद आलिम कहलाएँ परन्तु इलम की विशेषताओं और गुणों से बिलकुल अनभिज्ञ हैं और वह रोशनी और नूर जो वास्तविक इलम से मिलता है। उनमें पाया नहीं जाता ,बल्कि ऐसे लोग स्पष्ट हानि और नुक़्सान में हैं। ये अपनी आख़िरत छूआं और अधन्कार से भर लेते हैं। इन्हीं के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है مَنْ کَانَ فِیْ ھٰذِہٖٓ اَعْمٰی فَھُوَ فِی الْاٰخِرَۃِ اَعْمٰی (बनी इस्राईल:73) जो इस दुनिया में अंधा होता है,वह आख़िरत में भी अंधा उठाया जाएगा। जिसको यहां इलम तथा बसीरत और अनुभूति नहीं दी गई उसे वहां क्या इलम मिलेगा। अल्लाह तआला को देखने वाली आँख इसी दुनिया से ले जानी पड़ती है। जो यहां ऐसी आँख पैदा नहीं करता,उसे यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि वह अल्लाह तआला को देखेगा।

परन्तु जिन लोगों को सच्ची मार्फ़त और अनुभूति दी जाती है और वह इलम जिसका नतीजा अल्लाह तआला का भय है,प्रदान किया जाता है। वे वे हैं जिनको इस हदीस में अनबया बनी इस्राईल से तुलना की गई है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 321 से 326 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

Virtual क्लास

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया आस्ट्रेलिया की नैशनल आमिला और क़ायदीन मजालिस की अमीरुल मौमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से (ऑनलाइन) मुलाक़ात

ग़लत प्रकार के टेलीविज़न में प्रोग्राम न देखें, ग़लत प्रकार की दोस्तीयाँ न करें,

शादीशुदा अपनी पत्नीयों से हुस्न-ए-सुलूक करें, तलाक़ें कम से कम हों, घरों की लड़ाईयां कम से कम हों, ख़ुद्दाम इधर उधर शादियां करने की बजाय अहमदियों में करें

तिथि 12 सितंबर 2020 समय रात 9 बजे स्थान ख़िलाफ़त हाल मस्जिद बैतुल हादी, सिडनी प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात हुई।

जैसे ही 9बजे स्क्रीन पर प्यारे आक़ा का मुस्कुराता हुआ नूरानी चेहरा ज़ाहिर हुआ तो सब मैंबरान ने खड़े हो कर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत किया जिस पर हुज़ूर अक़्दस ने सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और बैठने का इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर अनवर की आमद के साथ ही सारी फ़िक्र और घबराहट की कैफ़ीयत दूर हो गई।

कौरोना वायरस ने जहां दुनिया में लोगों को अपनी अपनी जगह पर सीमित कर दिया है वहीं ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लिए पहले से ही ऐसे माध्यम पैदा कर दिए कि आज हम दस हज़ारों मील दूर अपने मुल्क में बैठे हुए ख़लीफ़तुल मसीह से उनके दफ़्तर में सीधे मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं। हमें उम्मीद थी कि इस वर्ष हुज़ूर आस्ट्रेलिया तशरीफ़ लाएँगे और हमारी हुज़ूर अनवर से आमने सामने मुलाक़ात होगी लेकिन ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से इस ऑनलाइन मुलाक़ात के माध्यम से सब ख़ुद्दाम और इतफ़ाल की यही कैफ़ीयत थी मानो हुज़ूर अनवर हमारे मध्य ही हैं।

30 नैशनल मज्लिस-ए-आमला के मैंबर्ज़ और12 क़ायदीन मजालिस को इस मुलाक़ात में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुलाक़ात एक घंटा बीस मिनट जारी रही जिसमें मैंबरान नैशनल आमिला-ओ-क़ायदीन मजालिस को प्यारे आक़ा के सामने अपना परिचय पेश करने का सौभाग्य नसीब हुआ। हुज़ूर अनवर ने मैंबरान नैशनल आमिला से अकेले अकेले उनके कामों का जायज़ा लिया और क़ीमती उपदेशों से नवाज़ा। तर्बीयती उमूर की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ख़ुद्दाम को तर्बीयत के जो दूसरे मुआमलात हैं उनके बारे में भी तवज्जा दिलाते रहें जैसे ग़लत प्रकार के टेलीविज़न पर प्रोग्राम न देखें, ग़लत प्रकार की दोस्तीयाँ न करें और शादीशुदा लोग अपनी पत्नीयों से हुस्न-ए-सुलूक करें। और इस बात का ख़्याल करें कि तलाक़ें कम से कम हों, घर की लड़ाईयां कम से कम हों और इस सम्बन्ध में मज्लिस आमिला के मैंबरान अपना ख़ास उदाहरण दिखाएंगे। ख़ुद्दाम को यह भी तलक़ीन करें कि इधर उधर शादियां करने की बजाय शादियां अहमदियों में करें तथा समाज में फैली हुई मुख़्तलिफ़ बुराईयों से कैसे बचना है यह भी आपके तर्बीयती प्रोग्राम का हिस्सा होना चाहिए। यदि इन्सान नमाज़ सही तरह पढ़ ले और अल्लाह तआला की ख़ातिर पढ़े तो बहुत सारी बुराईयां दूर हो जातीं हैं। नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा दिलाने के साथ साथ तर्बीयत के दूसरे प्रोग्राम भी तैयार करें जिसमें ख़ुद्दाम को आगाह करें कि अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है।

तर्बीयत औलाद के प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का वाक़िया वर्णन करते हुए फ़रमाया कि आपके बेटे ने पूछा कि क्या आपको मुझसे मुहब्बत है? तो आपने कहा हाँ। इस के बाद आपके बेटे ने पूछा कि क्या आपको अल्लाह से भी मुहब्बत है? आपने कहा हाँ। तो बेटे ने कहा यह किस तरह संभव है कि एक दिल में दो मुहब्बतें इकट्ठी हो जाएं? आपने कहा मोहब्बतों का अपना मयार होता है। जब अल्लाह तआला की मुहब्बत का प्रश्न आएगा तो उस की मुहब्बत सब पर ग़ालिब आ जाएगी और तुम्हारी मुहब्बत दूसरी श्रेणी की हो जाएगी। औलाद की मुहब्बत बेशक हो लेकिन अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार चलना है। यदि औलाद ग़लत काम कर रही है और अल्लाह तआला के हुक्म के ख़िलाफ़ चल रही है और हम यह कहें कि औलाद की मुहब्बत की वजह से में उन्हें कुछ न कहूं, यह ग़लत है। बचपन से बच्चे के दिल में डालें कि तुमसे मुझे मुहब्बत और सम्बन्ध है लेकिन मैं अल्लाह तआला से तुम्हारे से ज़्यादा मुहब्बत करता हूँ। इस लिए बहरहाल तुम्हें मुझ से मुहब्बत प्राप्त करने के लिए अल्लाह के हुक्मों पर चलना होगा और उस से मुहब्बत करनी होगी।

मुलाक़ात के बाद समस्त शामिल होने वालों में एक मुनफ़रद प्रकार का जोश दिखाई दिया और सबने अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुए एक दूसरे को मुबारकबाद दी और साथ ही हुज़ूर अनवर की हिदायात और नसाएह की रोशनी में अपने नफ़्स और ख़िदमत को बेहतर बनाने की तरफ़ मुतवज्जा हुए। सब के लबों पर एक ही बात थी कि इस जैसी बाबरकत मुलाक़ात बार-बार होनी चाहीए क्योंकि ख़लीफ़तुल मसीह के साथ गुज़ारा हुआ एक एक लम्हा हमारी रुहानी तरक़्क़ी और हौसला-अफ़ज़ाई का कारण था।

अल्लाह तआला हमारे प्यारे हुज़ूर को सेहत व सलामती वाली लंबी ज़िंदगी अता फ़रमाए और ख़लीफ़तुल मसीह के साय तले इस्लाम और अहमदियत को विश्व्यापी प्रगतियों से नवाज़े। आमीन

(वक़ास अहमद, सदर मज्लिस ख़ुद्दाम आस्ट्रेलिया)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 सितंबर2020)

Virtual क्लास

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया आस्ट्रेलिया की नैशनल आमिला और क़ायदीन मजालिस की अमीरुल मौमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से (ऑनलाइन) मुलाक़ात

ग़लत प्रकार के टेलीविज़न में प्रोग्राम न देखें, ग़लत प्रकार की दोस्तीयाँ न करें,

शादीशुदा अपनी पत्नीयों से हुस्न-ए-सुलूक करें, तलाक़ें कम से कम हों, घरों की लड़ाईयां कम से कम हों, ख़ुद्दाम इधर उधर शादियां करने की बजाय अहमदियों में करें

अमली मैदान में मजलिस-ए-आमला के मैंबरान को अपने विभाग के लिए अपने आपको उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहीए जिसका प्रभाव हर जमाअत का व्यक्ति क़बूल करता है

सैक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजा मुल्की सतह पर मैंबरान पार्लीमैंट और अरबाब-ए-इख़तियार के साथ अपने ताल्लुक़ात मज़बूत करें, स्थानीय जमाअतों के सदरान अपने क्षेत्रों की स्थानीय प्रशासन से सम्पर्क क़ायम करें

नैशनल मजलिस-ए-आमिला जमाअत अहमदिया बेल्जियम की अमीर-ऊल-मौमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ (ऑनलाइन) मुलाक़ात

वर्तमान हालात को दृष्टिगत रखते हुए आदरणीय अमीर साहिब बेल्जियम ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में नैशनल मजलिस-ए-आमिला जमाअत अहमदिया बेल्जियम के मैंबरान के साथ एक ऑनलाइन मुलाक़ात की दरख़ास्त की जिसे हमारे प्यारे इमाम ने प्रेमपूर्वक क़बूल फ़रमाया। अल्लाह तआला हमारे प्यारे आक़ा की सेहत और आयु में बरकत अता फ़रमाए। आमीन

आदरणीय अमीर साहिब की तरफ़ से जब यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि तिथि 26 सितंबर 2020 ई. शनिवार के दिन स्थानीय वक़्त के अनुसार दोपहर डेढ़ बजे हमारे प्यारे आक़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वीडीयो लिंक के माध्यम से जमाअत अहमदिया बेल्जियम की मजलिस-ए-आमिला के इजलास की सदारत फ़रमाएँगे तो अपने आक़ा से मुलाक़ात के लमहात का तसव्वुर करके रुहानी आनंद की प्रभावी लहर पूरे जिस्म में दौड़ने लगी और इस के साथ ही चंद लम्हों के बाद यह ख़्याल भी दिल में शर्मिंदगी और झिजक का कारण बनता कि अपनी कमज़ोरियों और कोताहियों में लिपटी हुई कार-गुज़ारी किस तरह अपने आक़ा की ख़िदमत में प्रस्तुत करेंगे तब तवज्जा दुआ की तरफ़ आकर्षित हो जाती कि अल्लाह तआला हमारी कोताहियों की पर्दापोशी फ़रमाए। आमीन। हमारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह तिथि 26 सितंबर 2020 शनिवार के दिन हुई।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 26 सितंबर 2020 ई. का मुबारक सूरज तलूअ

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 19 August 2021 Issue No.33

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हुआ और मजलिस-ए-आमला के मैंबरान अपने आक़ा के दीदार का प्रेम और दिलों में जोश लिए हुए निर्धारित समय के दिन 11 बजे से ही मस्जिद बैतुल-मुजीब पहुंचना शुरू हो गए। दोपहर साढ़े बारह बजे समस्त मैंबरान मजलिस-ए-आमला मस्जिद के मर्कज़ी हाल में अपनी अपनी नशिस्तों में बैठ गए और ज़िक्र इलाही करते रहे। 1 बजकर 32 मिनट पर हम सब के प्रिय आक़ा मुबारक मुख टीवी स्क्रीन पर रौनक अफ़रोज़ हुआ और अस्सलामो अलैकुम विरहम्तुल्लाह का सुंदर तौहफ़ा प्रस्तुत फ़रमाया। समस्त मैंबरान ने सम्मान में खड़े हो कर वाअलैकुम मस्सलाम कहते हुए अपने महबूब आक़ा का सवागत किया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बैठ जाएं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर आदरणीय अमीर साहिब ने अर्ज़ किया कि यह मजलिस-ए-आमिला बेल्जियम के मैंबरान हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पहले दुआ कर ले। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर ने अमीर साहिब से दरयाफ़त फ़रमाया कि आपके दाएं तरफ़ कौन से दोस्त बैठे हैं। इस पर उन का परिचय कराया गया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने अमीर साहिब के बाएं तरफ़ बैठे हुए मैंबरान से परिचय हासिल किया। इस इबतिदाई परिचय के बाद समस्त मैंबरान मजलिस-ए-आमिला ने अकेले अकेले बाअदब खड़े हो कर अपने आक़ा की ख़िदमत में अपना और अपने विभाग का परिचय प्रस्तुत किया और हुज़ूर अनवर के इरशाद पर मुख़्तसिरन अपने विभाग की कार-गुज़ारी के कुछ अहम नुकात प्रस्तुत करने की सआदत हासिल की जिनका जायज़ा लेने के बाद हुज़ूर अनवर ने इस विभाग की कारकर्दगी को बेहतर बनाने के लिए विनम्रता से रहनुमाई फ़रमाई। यह कहना ग़लत नहीं होगा कि हुज़ूर अनवर की रहनुमाई का बुनियादी नुक़्ता यह था कि अमली मैदान में मजलिस-ए-आमला के मैंबरान को अपने विभाग के लिए अपने आपको उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहीए जिसका प्रभाव हर जमाअत का व्यक्ति क़बूल करता है।

जायज़े के दौरान हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी साहिब तालीमुल क़ुरआन और वक़्फ़-ए-आरज़ी से दरयाफ़त फ़रमाया कि मजलिस-ए-आमला के कितने मैंबरान हैं जिन्हों ने अहमदी अहबाब को क़ुरआन-ए-करीम की तालीम देने के लिए अपने आपको वक़्फ़-ए-आरिज़ी के लिए प्रस्तुत किया है? इस स्कीम की कामयाबी के लिए आमिला के मैंबरान को पहले ख़ुद उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करना चाहिए यदि आप ख़ुद अपने वक़्त की क़ुर्बानी कर के अपने आपको प्रस्तुत नहीं करेंगे तो अफ़राद-ए-जमाअत से कैसे तवक़्क़ो रख सकते हैं कि वे आपकी दी हुई हिदायात पर अमल करेंगे। अमली उदाहरण के इस तर्ज़-ए-अमल को दर्जा बदरजा स्थानीय जमाअतों और ज़ेली तन्ज़ीमों की मजालिस-ए-आमिला में प्रचलित करें। इसी तरह सैक्रेटरी साहिब उमूर-ए-ख़ारिजा को हिदायत फ़रमाई कि मुल्की सतह पर मैंबरान पार्लीमैंट और प्रभावी लोगों के साथ अपने ताल्लुक़ात पुख़्ता करें इसी तरह स्थानीय जमाअतों के सदरान अपने क्षेत्रों की स्थानीय प्रशासन से सम्पर्क क़ायम करें। सैक्रेटरी साहिब तर्बीयत ने अपने आक़ा की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि विभाग तर्बीयत ने इस समाज में माता पिता और बच्चों के मध्य पैदा होने वाली दूरी को कम करने के लिए ये प्रोग्राम प्रस्तुत किया है कि दिन में कम अज़ कम एक वक़्त का खाना घर के समस्त लोग इकट्ठे मिलकर खाईं ताकि एक दूसरे के साथ अपने ख़्यालात के इज़हार का अवसर मिल सके। इस स्कीम पर हुज़ूर अक़्दस ने इज़हार-ए-ख़ुशनूदी फ़रमाया। सैक्रेटरी साहिब तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने बैअतों की संख्या के विषय में पूछा और रहनुमाई करते हुए इरशाद फ़रमाया कि अपने मुल्क में समाज के मुख़्तलिफ़ वर्गों, मज़हबी तन्ज़ीमों सियासतदानों और मीडीया हाऊसज़ इत्यादी के साथ बड़े पैमाने पर अपने ताल्लुक़ात बढ़ाईं ताकि न केवल इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम उन तक पहुंचे बल्कि इस्लाम की तालीम से सम्बन्धित जो ग़लत-फ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उन को दूर किया जा सके।

सैक्रेटरी साहिब M.T.A को संबोधित करते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अपने विभाग को विश्व्यापी मयार तक equipped करके M.T.A के लिए मयारी प्रोग्राम तैयार करके भेजें। इसी तरह ख़ाकसार (सैक्रेटरी रिश्ता नाता) को हिदायत फ़रमाई कि अपने विभाग की मदद और रहनुमाई के लिए दफ़्तर ऐडीशनल वकील तबशीर् इस्लामाबाद यू.के के साथ भी सम्पर्क करें। इसके बाद आदरणीय मिशनरी इंचार्ज साहिब ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अपने निवेदन प्रस्तुत किए

पृष्ठ 1 का शेष

हम भी साथ होते। मुनाफ़िक़ों का कथन तो क़ुरआन-ए-मजीद में स्पष्ट तौर पर वर्णन हुआ है। काफ़िरों की भी यही हालत होती होगी। यह एक तिब्बी बात है, इस से इंकार नहीं हो सकता।

मेरे नज़दीक इनके इलावा आयत के एक और अर्थ भी हैं। मुफ़स्सिरीन आम तौर पर ज़ाहिरी लताफ़त, फ़साहत और बलाग़त और चमत्कार पर बेहस करते हैं और क़ुरआन-ए-मजीद की शिक्षा की , विशेषताओं पर बहुत कम बेहस करते हैं। मेरे ख़्याल में सबसे बड़ी चीज़ जिस के लिए क़ुरआन-ए-करीम आया है वह इसकी पूर्ण और मनमोहक शिक्षा है और इसी की तरफ़ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ में इशारा किया है और आयत رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا इन्ही शिक्षा की ख़ूबीयों पर गर्व करने का वर्णन किया है अर्थात फ़रमाता है कि इस्लाम की शिक्षाओं की ख़ूबीयों को देखकर बार बार काफ़िर कह उठते हैं और कह उट्ठेंगे काश हम भी मुस्लमान होते और यह हमेशा होता रहा है और होता रहेगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से एक यहूदी ने कहा कि क़ुरआन-ए-मजीद में एक आयत है यदि वह हमारी किताब में उतरती तो हम उस दिन ईद मनाते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि वह कौन सी आयत है, उसने उत्तर दिया اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ الآيه आपने फ़रमाया वह दिन तो हमारे लिए दो ईदों का दिन था। अर्थात जुमा का दिन और अर्फ़ा के दिन यह आयत नाज़िल हुई थी। ऐसा ही एक और यहूदी ने कहा कि आपकी शरीयत में एक बात देखकर आश्चर्य होता है कि इन्सानी ज़िंदगी का कोई हिस्सा नहीं जिस पर इस शरीयत ने रोशनी न डाली हो। यह ख़ाहिशात हैं जो हज़ारों के दिलों में पैदा हुए होंगे। परन्तु इज़हार उनका दो एक के मुँह से हुआ और क़ुरआन-ए-मजीद ने भी फ़रमाया है يَوَدُّ(उनके दिल चाहते हैं)قُوْل नहीं फ़रमाया (कि वे मुँह से भी इज़हार करते हैं) इस ज़माना में भी तलाक़ का मसला, शराब का मसला, विरसा का मसला और ऐसे ही और बहुत से मसायल हैं कि जिन पर दुनिया गर्व कर रही है। जब एक यूरोपीयन के दिल में ख़्याल आता है कि हमारे हाँ भी तलाक़ का क़ानून बनना चाहीए तो दूसरे अर्थों में वह यही कहता है कि काश में मुस्लमान होता। ऐसा ही जब एक अमरीकन के दिल में ये तहरीक पैदा होती है कि शराब बंद होनी चाहीए तो वह मानो رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ की तसदीक़ करता है। अभी कुछ अरसा हुआ कि हिंदुस्तान की लेजिस्लेटिव असैंबली के एक हिंदू मैंबर ने सगरसनी की शादी के सम्बन्ध में मुसव्वदा क़ानून पेश किया था। उसने समय-ए-तक़रीर में कहा मैं बड़ी हसरत से देखता हूँ कि जिस तरह इस्लाम ने शादी का क़ानून बना कर मुस्लिम क़ौम को महफ़ूज़ कर दिया है वैसा क़ानून हमारे हाँ कोई नहीं।

आयत में भी رُبَمَا का शब्द रखा गया है जो कई दफ़ा पर दलालत करता है अर्थात उन लोगों को बहैसीयत मजमूई इस्लाम लाने का ख़्याल पैदा नहीं होगा बल्कि अलग अलग मसायल पर उनके दिल में यह ख़ाहिश पैदा होगी कि काश यह मसला भी हमारे पास होता।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 4 पृष्ठ 5 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

और आख़िर में प्यारे आक़ा अमीर साहिब से सम्बोधित हुए। हुज़ूर अक़्दस के अपना क़ीमती वक़्त और उपदेश अता फ़रमाने पर अमीर साहिब ने अपने आक़ा का शुक्रिया अदा किया और दुआ का निवेदन किया कि अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर की हिदायात के अनुसार ख़िदमत-ए-दीन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। ढाई बजे हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एक घंटे की मुलाक़ात हो गई है। इस के बाद समस्त मैंबरान ने खड़े हो कर अपने आक़ा को ख़ुदा-हाफ़िज़ कहा और इस तरह बरकतों और शफ़क़तों से लबरेज़ यह रुहानी इजलास बख़ैर-ओ-ख़ूबी इख़ततताम पज़ीर हुआ। अल्हमदोलिल्ला : रफ़ीक़ अहमद हाश्मी, सैक्रेटरी रिश्ता नाता

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 2 अक्तूबर2020)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad